# मयख़ाना

## 'अदम' अब्दुल हमीद

ख़ाली है अभी जाम मैं कुछ सोच रहा हूं
ऐ गर्दिशे-अय्याम[1] मैं कुछ सोच रहा हूं
साकी तुझे इक थोड़ी सी तकलीफ तो होगी
सागर को ज़रा थाम, मैं कुछ सोच रहा हूं

साकी शराब ला कि तबीयत उदास है
मुतरिब[2] रबाब उठा कि तबीयत उदास है
तौबा तो कर चुका हूं मगर फिर भी ऐ 'अदम'
थोड़ा सा ज़हर ला कि तबीयत उदास है

आ ग़मे-दौरां[3] दरे-मयख़ाना[4] है नज़दीक
आराम से बैठेंगे ज़रा बात करेंगे
जन्नत मे न मय है न मुहब्बत न जवानी
किस चीज़ पे इन्सां बसर-औक़ात[5] करेंगे

---

१. कालचक्र २. संगीतकार ३. सांसारिक दुःख ४. मधुशाला का दरवाज़ा ५. निर्वाह

# मयख़ाना

## 'अदम' अब्दुल हमीद

खाली है अभी जाम मैं कुछ सोच रहा हूं
ऐ गर्दिशे-अय्याम[1] मैं कुछ सोच रहा हूं
साकी तुझे इक थोड़ी सी तकलीफ तो होगी
सागर को जरा थाम, मैं कुछ सोच रहा हूं

साक़ी शराब ला कि तबीयत उदास है
मुतरिब[2] रबाब उठा कि तबीयत उदास है
तौबा तो कर चुका हूं मगर फिर भी ऐ 'अदम'
थोड़ा सा ज़हर ला कि तबीयत उदास है

आ गमे-दौरां[3] दरे-मयखाना[4] है नज़दीक
आराम से बैठेंगे जरा बात करेंगे
जन्नत मे न मय है न मुहब्बत न जवानी
किस चीज़ पे इन्सा बसर-औकात[5] करेंगे

---

१ कालचक्र २. संगीतकार ३. सांसारिक दुःख ४. मधुशाला का दरवाज़ा। ५. निर्वाह

नशा पिला के गिराना तो सबको आता है
मज़ा तो जब है कि गिरतों को थाम ले साक़ी

ग़रूरे-मयकशी[1] की कौन सी मंज़िल है ये साक़ी
खनक सागर की आवाज़े-ख़ुदा मालूम होती है

साक़ी मेरे ख़ुलूस की शिद्दत तो देखना
फिर आ गया हूं गर्दिशे-दौरां[2] को टालकर

सहर[3] के वक़्त मय पीने से मुझ को रोक मत नासेह[4]
कि सिजदे के लिए दिल में ज़रा सा सिद्क़[5] लाना है
'अदम' साक़ी को पछताना पड़ेगा अपनी ग़फ़लत पर
कि हमको दो घड़ी आराम करके लौट जाना है

मैं मयकदे की राह से होकर निकल गया
वर्ना सफ़र हयात[6] का काफ़ी तवील था

सौ जाम ज़हर और 'अदम' मय का एक घूंट
फिर भी ये तोहमतें हैं कि हम मयगुसार[7] थे

---

१. मदिरापान का अभिमान २. कालचक्र ३. सुबह ४. नसीहत करनेवाला ५. सच्चाई ६. जीवन ७. शराबी

जाने क्या पूछा था कल रात मुझसे इक मयख्वार[1] ने
आलमे-मस्ती[2] में लब पर आपका नाम आ गया

वरग दे साकी ज़रा सी रौशनी
ज़िन्दगी का रास्ता तारीक[3] है
कौन कौसर[4] तक मसाफत[5] से करे
मयकदा फिर्दौस[6] से नजदीक है

मुजरिमे-तौबा[7] तो हूं, लेकिन खुदा के वास्ते
इक ज़रा ये देख लीजेगा कि वक्ते-शाम है
लोग कहते हैं 'अदम' ने मयगुसारी[8] छोड़ दी
इफतरा है, झूट है, बुहतान है, इल्ज़ाम है

तौबा को तोड़ने की नीयत न थी मगर
मौसम का एहतिराम[9] न करते तो ज़ुल्म था

पिला न इतनी कि रास्ते में मेरी मतानत[10] पे हर्फ[11] आए
ये मेरी पहली खता है साकी मुझे कोई नर्म सी सज़ा दे

---

१ शराबी २. मस्ती की हालत ३. अंधेरा ४ जन्नत की नहर (शहद की) ५. यात्रा ६ जन्नत ७. शराब पीने से तौबा करने का अपराधी ८. मदिरापान ९. आदर १०. गंभीरता ११. इल्ज़ाम

गिरे जब भी मयख़्वार सिजदे में पीकर
सितारों में टकरा गए बादाख़ाने[1]

न जाम है, न सितारे, न कोई दोस्त 'अदम'
शबे-हयात[2] को मैं किस तरह गुज़ारूँगा

चांदनी रात में घर जश्न मनाता है शबाब[3]
हाय क्या चीज़ प्यालों में ढला करती है

इन्तिहा[4] की ख़बर नहीं मालूम
इब्तिदा[5] साग़रे-शराब से[6] कर

जहां फ़क़ीरों को घेर लेती है नागहां[7] गर्दिशे-ज़माना[8]
वहां से रस्ता ज़रूर जाता है कोई सू-ए-शराबख़ाना[9]

ज़ुल्मतों से[10] न डर कि रस्ते में
रौशनी है शराबख़ाने की

मय के बारे में 'अदम' इतनी ख़बर है हमको
चीज़ अच्छी है तबीयत की रवानी के लिए

---

१. शराबख़ाने २. जीवन रूपी रात ३. जवानी ४. अन्त ५. आरम्भ ६. शराब के प्याले से ७. अचानक ८. कालचक्र ९. शराबख़ाने की ओर १०. अंधेरों से

'अदम' ख़राबाती[1] आदत थी पहले
मगर अब तो तबीअत हो गई है

मयकदे में मुझे महसूस हुआ है अक्सर
ये वो दुनिया है जहां ग़म की कोई रात नहीं

जवाब सख़्त था ज़ाहिद की गुफ़्तगू का 'अदम'
उठा के जाम ज़रा मुस्करा दिया होता

मयकदे[2] का ज़मीर[3] रौशन है
तेरी आंखों के आबगीनों से[4]

'अदम' रोज़े-अव्वल[5] जब क़िस्मतें तक़सीम होती थीं
मुक़द्दर[6] की जगह मैं साग़रो-मीना[7] उठा लाया

हर मयकदे में एक अक़ीदत[8] है ऐ 'अदम'
हर महजबीं[9] से आंख मिलाता चला गया

इन हसीं आंखों का याराना कहां गुम हो गया
महवे-हैरत[10] हूं कि मयख़ाना कहां गुम हो गया

---

१. मदिरापान २. मधुशाला ३. अन्तर्मन ४. आंसुओं से ५. आदि-दिवस ६. भाग्य ७. शराब का प्याला और सुराही ८. श्रद्धा ९. चन्द्रमुखी १०. आश्चर्यचकित

लाज़िम है मयकदे की शरीअत[1] का एहतिराम[2]
ऐ दौरे-रोज़गार[3] ज़रा लड़खड़ा के चल

दैरो-हरम[4] नहीं तो मयखाना[5] ही सही
ऐ गर्दिशे-ज़माना[6] कहीं तो क़याम कर[7]

बादाकशी[8] हराम है या ज़िन्दगी हराम
तस्दीक़ कर रहा हूं ग़मे-रोज़गार से

तूफ़ाने-हवादिस में[9] साक़ी, कुछ लम्हे[10] जान मे जी जाः
कुछ इश्क की तल्खी सह जाऊं, कुछ ज़हर के सागर पी जाः
नौवारिदे-मयखाना[11] हूं 'मदन'! मालूम नहीं है जाम में क्
इस सोच में खोया बैठा हूं, परहेज़ करूं या जी जाः

जब तक मेरे सबू[12] में ज़रा सी शराब है
मेरे लिए हयात[13] शबे-माहताब[14] है
ऐ मोहतसिब[15]! तमीज़ से सहबा[16] का नाम ले
कमबख्त! ये हसीन सितारों का ख्वाब है

---

१. धर्म २. आदर ३. कालचक्र ४. मन्दिर-मस्जिद (काबा-काशी) ५. शराबखाना ६. संसार-चक्र ७. ठहर ८. मदिरापान ९. घटनाओं के तूफ़ान में १०. क्षण ११. शराबखाने में नवागन्तुक १२. शराब का मटका १३. जीवन १४. चांदनी रात १५. रसाध्यक्ष १६. शराब

गालिबन मय नहीं तो ज़हर सही
ये भी हम लोग जाम पीते है

कोई जाम इस तरह छलके कि मौसम लहलहा उट्ठे
कोई ज़ुल्फ़' इस तरह बिखरे कि गहरी शाम हो जाए
'मदम' जब होश मे होता हू यू महसूस होता है
वो शाइरी' हू जिसे जगत मे गहरी शाम हो जाए

मैं ग़ौर कर रहा हूं रमूज़े-हयात' पर
इस वक्त इक छलकता हुआ जाम चाहिये
नासेह मुझे शराब की तोहमत' पसन्द नहीं
मुझको तेरी निगाह का इल्ज़ाम चाहिये
करता है जश्ने-तौबा' खराबात' में 'मदम'
ऐ वेमदव इतायते-एहकाम' चाहिये

जब भी आता है जाम हाथों मे
सैकड़ो नाम याद आते है

'मदम' की तशनालबी' को कुछ और है मतलूब'
शराब दे मगर अन्दाज़ा-ए-ख़ुमार'' न कर

---

१. पेशा २. शाइर, मुसाफ़िर ३. जीवन-रहस्य ४. इल्ज़ाम ५. ...
पर आसक्ति (वहशत) ६. मधुशाला ७. आत्म-चिन्तन ८. होंटों की प्य...
९. चाहिये १०. नशे का अनुमान

पीता हूँ हादिसात के[1] इर्फ़ान[2] के लिए
मय एक तजज़िया[3] है ग़मे-रोज़गार का

ये जो दो कतरे नज़र आते हैं साकी जाम में
हम पियेंगे इनको क्या और पी के लहरायेंगे क्या
पूछते है हम से अहले-होश[4] मस्ती का सबब
हम 'अदम' ख़ुद ही नहीं समझे तो समझायेंगे क्या

इलाज दो ही मुसल्लम[5] हैं शिद्दते-ग़म[6] के
शराबे-नाब[7] है या मर्गे-नागहानी[8] है

ऐ ख़ुदा-वन्दाने-मयख़ाना[9] तुम्हारी ख़ैर हो
आ गए थे इस तरफ़ भूले हुए भटके हुए

गुल[10] भी हैं, मय[11] भी है, मुगन्नी[12] भी
आओ, आगाज़े - दौरे - जाम[13] करो
बात फिर हमसे पूछना, पहले
बदगुमानी को नज़्रे - जाम[14] करो

---

१. दुर्घटनाओं के २. [illegible]ज्ञान (परिचय) ३. विश्लेषण ४. होश वाले [illegible] ६. ग़म का आधिक्य ७. शराब ८. अचानक मृत्यु ९. मधुशाला [illegible] (मुद्रा, मालिक) १० फूल ११. शराब १२. गायक १३. प्याले का प्रारंभ (मदिरापान की शुरुआत) १४. प्याले का भेंट

है तुम मस्त' से गर्दे आई भी तग की ताड़क गो
ख़ते-साग़र मेरे साग़र का मल्हार है सा
ज़रा सी एहतियात इस चीज़ की भी दिल में रख ले
तबीयत हम फ़क़ीरों की बड़ी नाज़ुक है सा

जहाँ कुछ सोचने का वक़्त मिलता है ग़ज़ाल' मे
उसे मकतब' नहीं कहते, उसे मयख़ाना कहते है

न टूटे जाम से टकरा के जिसके कुफ़' शीशा का
'मज़हब' कुछ और होता है, वो मयख़ाने नहीं होति

साक़ी न पूछ किस तरह पहुंचे तेरे हुज़ूर
रस्ते में इक तवील बियाबाने-होश' था

इनायत कर मगर तोहमत-ज़दा' इक जाम है साक़ी
कि मेरी ज़िन्दगी पर होश का इल्ज़ाम है साक़ी
तेरे साग़र-ब-कफ़' हाथों के नज़्ज़ारे की ठंडक मे
मेरी तपती हुई आंखों को कुछ आराम है साक़ी
जवाने-होश' से ये कुफ़' सरज़द" हो नहीं सकता
मैं कैसे बिन पिये ले लूं ख़ुदा का नाम है साक़ी

१. रेखा, सीमा २. फ़र्मेन्द ३ पाठशाला ४. नास्तिकता ५.
रूपी मरुस्थल ६. जिस पर मिथ्यारोप लगा हो ७. हाथ में प्याला लिए
८. होश की जवान (हालत) ९. नास्तिकता १०. अपराध करना

नाम खुदा[1] है ग्रावगीनों पर[2]
कितने डूबे हुए सितारों के

हश्र[3] तक भी ग्रगर सदायें[4] दें
बीत कर वक्त फिर नहीं मुड़ते
सोच कर तोड़ना इन्हें साक़ी
टूट कर जाम फिर नहीं जुड़ते

माहो-ग्रजुम[5] के सर्द होंटों पर
हमनशी[6] तज़किरा[7] है सदियों का
जाम उठा ग्रौर दिल को ज़िंदा रख
ग्रास्मा मक़बरा है सदियों का

एक रेज़ा[8] तेरे तबस्सुम[9] का
उड़ गया था शराबख़ाने से
हौज़े-कौसर[10] बना दिया जिसको
वाइज़ों ने[11] किसी बहाने से

---

१. खुदे हुए २. बुलबुलों पर ३. प्रलय ४. ग्रावाज़ें ५. चाद-सितारों
७. ज़िक्र ८. कण ९. मुस्कराहट १०. जन्नत की शराब का तालाब
... ने

दुनिया में अब और चाहिए क्या मुझको
साक़ी भी है, अब्र भी शराब भी है

जन्नत का मज़ा' दिखला दिया मुझको
कौनैन' का ग़म भुला दिया मुझको
कुछ होश नहीं कि हूँ मैं किस आलम में'
साक़ी ने ये क्या पिला दिया मुझको

नासेह'! हमारी तौबा में कुछ शक नहीं मगर
शाना' हिलायें आ के घटायें तो क्या करें
मयख़ाना दूर, रास्ता तारीक', हम मरीज़
मुँह फेर दें उधर जो हवाएँ तो क्या करें

जिनां' मे पहले-पहल पियेगा तो लड़खड़ाता फिरेगा ज़ाहिद'
शराबे-कौसर' की है मगर धुन, जहां में पी ले शराब पहले
निगाह साक़ी की मुस्कराई कहा जब 'अख़्तर' ने अपनी धुन में
पियेंगे पीते रहेंगे मयकश, मगर ये खाना-ख़राब पहले

मुख़्तसर सोहबत है साक़ी, जल्द-जल्द
जाम उठा, मीना" बढ़े, साग़र चले

. २. संसार ३. हालत में ४. नसीहत करने वाला ५. कंधा
७. जन्नत ८. विरक्त ९. जन्नत की शराब १०. सुराही

रहे मर कर भी यारब मयकदे में दौर मस्तों का
बनाए जायँ इनकी ख़ाक से जामो-सबू[1] बरसों

मसजिद में बुलाते हैं हमें ज़ाहिदे-नाफ़हम[2]
होता कुछ अगर होश तो मयख़ाने न जाते

अंगूर में यही थी पानी की चार बूँदें
पर जब से खिंच गई है तलवार हो गई है

ज़ाहिद उमीदे-रहमते-हक़[3] और हुब्बे-मय[4]
पहले शराब पी के गुनहगार भी तो हो

कुछ जह्ल न थी शराबे-अंगूर[5]
क्या चीज़ हराम हो गई है

वो मस्त होश में आने का कस्द[6] करता है
पुकारता है ये साक़ी कि होशियार हूं मैं

जुदा है दुख़्तरे-रज़[7] का नाम हर सोहबत[8] में ऐ साक़ी
परी है मयकशों में[9], हूर है परहेज़गारों में

---

१. प्याले और सुराहियां २. नासमझ विरक्त ३. ख़ुदा की कृपा की आशा ४. शराब की बुराई ५. अंगूर की शराब ६. इरादा ७. अंगूर की बेटी ८. महफ़िल ९. मयकशों में

न ये शीशा[1], न ये सागर[2], न ये पैमाना बने
जाने-मयख़ाना तेरी नर्गिसे-मस्ताना[3] बने

बहुत लतीफ़[4] इशारे थे चश्मे साक़ी के[5]
न मैं हुआ कभी बेख़ुद[6] न हुशियार हुआ

एक ऐसी भी तजल्ली[7] आज मयख़ाने में है
लुत्फ़ पीने में नहीं है बल्कि खो जाने में है

## 'असीर' लखनवी

शीशा[8] रहे बगल में जामे-शराब लब पर[9]
साक़ी, यही मज़ा है दो दिन की ज़िन्दगी का

हुआ जो ख़ाक बदन, सागरे-शराब[10] बना
हज़ार शुक्र कि ज़र्रे[11] से आफ़ताब[12] बना

---

१. बोतल २. प्याला ३. मस्त आँखें ४. नाज़ुक, मृदुल ५. साक़ी की आँख के ६. बेहोश ७. ज्योति (प्रभा, प्रेयसी) ८. बोतल ९. होंठों पर १०. शराब का प्याला ११. कण १२. सूरज

इक जाम मुझे बहक़-खुदा[1] ऐ साक़ी!
पर्दे से ज़रा सामने आ ऐ साक़ी
मुतरिब[2] जो नहीं छेड़ तू ही इक नग़मा
है गोश बर-आवाज़[3] फ़ज़ा[4] ऐ साक़ी

मुझ रिन्द[5] को बख्शी शराब ऐ साक़ी
दुनिया में नहीं तेरा जवाब ऐ साक़ी
हर क़तरा मेरे हक़ में करम[6] की बारिश
अब जाम का तू करले हिसाब ऐ साक़ी

साक़ी ने कहा ग़ैरत-नाहीद[7] हूं मैं
मय बोल उठी जल्वा-ए-उमीद हूं मैं
साग़र से छलक कर जो ज़मीं तक पहुंची
हर ज़र्रा पुकार उट्ठा कि खुर्शीद[8] हूं मैं

मग़रिब[9] से उमडते हुए बादल आए
भीगी हुई रुत और सुहाने साए
साक़ी, लबे-जू[10], मुतरिबे-नौख़ेज़[11], शराब
है कोई जो वाइज़[12] को बुलाकर लाए

---

१. खुदा के नाम पर २. गायक ३. आवाज़ पर कान लगाए हुए ४. वातावरण ५. मद्यप ६. दैवी कृपा ७. ज़ोहरा (सितारे) को शर्माने वाला ८. सूरज ९. पश्चिम १०. नदी का किनारा ११. नवयुवा गायक १२ धर्मोपदेशक

क्यों न हो शौके-जाम सावन में
मय को निसबत[1] है इस महीने से

## एक शे'र

खुश्क बातों में कहां ऐ शैख[2] कैफ़े-जिन्दगी[3]
वो तो पीकर ही मिलेगा जो मज़ा पीने में है

## 'अख़्तर' अली अख़्तर

करवटें लेती है फूलों में शराब
हम से इस वक्त में तौबा होगी ?

कुछ इस निगाह से देखा था मुझ को साकी ने
छुटी शराब मगर शाने-बेखुदी[4] न गई

हैफ़ है वो रिन्दे-नामुराद[5] जिस ने उठाके जामे मय[6]
हाथ से फिर गिरा दिया, रंजे-खुमार[7] देखकर

१. सम्बन्ध २. धर्म गुरु ३. जीवन का आनन्द ४. मदमस्तता की [illegible] ५. [illegible] ६. नामुराद शराबी ७. शराब का प्याला ८. [illegible]

मुमकिन नहीं मैं तर्क करूँ मयनोशी[1]
और कातिबे-तक़दीर[2] को जाहिल ठहराऊँ

भर दे मेरा पैमाना[3] लबालब साक़ी
जल उठने को हैं सीने के ज़ख़्म अब साक़ी
ये भी मेरा मक़सूम[4] है वो भी तक़दीर
तक़दीर है इक जिह्ले-मुरक्कब[5] साक़ी

## शे'र

शायरी हो कि शग्ले-नग्मा-ओ-मय[6]
मुद्दआ[7] ख़ुद को भूल जाना है

## 'अख़्तर' लखनवी

इक हमीं नहीं साक़ी लाइक़े-करम[8] तन्हा[9]
और भी हैं तश्ना-लब[10], बस नहीं हैं हम तन्हा

---

१. मदिरा पान २. भाग्य-लेखक ३. प्याला ४. भाग्य ५. निश्चित अथवा ठोस मूर्खता ६. संगीत और मदिरापान का मशग़ला (दिल-बहलाव) ७. उद्देश्य ८. कृपा-पात्र ९. अकेले १०. प्यासे

पारसा[1] अगर तुम भी बन गए तो ग़म कैसा
हम रखेंगे रिन्दी का[2] दोनों ! भरम तन्हा

हम से रिन्दों का ठिकाना क्या है
तुम कहाँ पीरे-हरम[3] साथ चले !

## 'अख़्तर' हरीचन्द

वही है अपनी रिन्दी[4] और वही वाइज़[5] की फ़हमाइश[6]
बुरी आदत कोई भी हो ब-आसानी नहीं जाती

## 'अजमल' अजमली

तेरे दर से[7] ग़म लेकर जब गुनाहगार उट्ठे
मस्जिदों का कहना क्या मयकदे सवार आए

---

१. संयमी या परहेज़गार २. शराबी होने का ३. मस्जिद का इमाम या धर्म गुरु ४. मदिरापान ५. धर्मोपदेशक ६. अनुरोध ७. दरवाज़े से

खाने के लिए उससे भला क्या मांगू
जी भर के जो पीने भी नहीं देता है

इक लुत्फ भी है ग़म के सिवा जीने में
तल्खी सही मस्ती भी तो है पीने में
मैं तालिबे-फ़र्दोस[1] नहीं ऐ ज़ाहिद[2]
सदशुक्र[3] कि दोज़ख है मेरे सीने में

फिर 'हाफ़िज़ो-'ग़ालिब' को जवानी दे दूं
'ख़य्याम' को फिर क़ालिबे-सानी[4] दे दूं
इकपल के लिए मैं जो खुदा हो जाऊं
दुनिया को बस अंगूर का पानी दे दूं

## अलीअहमद जलीली

कोई सागर न पहुंचा मेरे जर्फ़[5] तक
तश्नगी[6] हासिले-तश्नगी[7] रह गई

१. जन्नत का इच्छुक २. विरक्त, परहेज़गार ३. सौ शुक्र ४. नया शरीर
पीने की सामर्थ्य ६. प्यास ७. प्यास की प्राप्ति (पूर्णता)

## अली जवाद ज़ैदी

बेख़ुदी[1] में हाथ कांपा, जाम[2] छूटा, मय गिरी
जाने किन नज़रों से देखेगी भरी महफ़िल मुझे

## 'अल्ताफ़' मुशहदी

शैख़[3] के मुंह में भी पानी आ गया
कैफ़-आवर[4] मयकदे की बात पर

## 'असर' लखनवी

क्या हमने छलकते हुए पैमाने में[5] देखा
ये राज़ है मयख़ाने का इफ़शा[6] न करेंगे

---

१. आत्म विसर्जन २. प्याला ३ धर्मगुरु ४. नशीली ५. प्याले में ६. प्रकट

## 'अकबर' इलाहाबादी

मय[1] भी होटल में पियो चन्दा भी दो मस्जिद में
शेख़[2] भी ख़ुश रहें, शैतान भी बेज़ार न हो

हंगामा है क्यों बरपा, थोड़ी सी जो पी ली है
डाका तो नहीं डाला, चोरी तो नहीं की है

शेख़ की दावत में मय का क्या काम
एहतियातन कुछ मँगा ली जाएगी

'अकबर' के जो मरने की ख़बर
साक़ी ने सुनी तो ख़ूब कहा
मरना तो ज़रूरी था ही इसे,
रिन्दों के[3] लिए कुछ कर भी गया

दुख़्तरे-रज़[4] ने उठा रखी है आफ़त सर पर
ख़ैरियत गुज़री कि अंगूर के बेटा न हुआ

१. शराब, मदिरा २. धर्म गुरु ३. पक्के शराबियों के ४.

## 'आज़ाद' अनसारी

बहम[1] मगर कभी याराने-बादाख्वार[2] हुए
तो एक जाम के हम भी गुनाहगार हुए

## 'अज़ाद' जगन्नाथ

जामो-सबू के बाद तेरी याद आ गई
शायद तेरा मुक़ाम[3] है जामो-सबू के बाद

मेरे सुरूर से अन्दाज़ा-ए-शराब न कर
मेरा सरूर अन्दाज़ा-ए-शराब[4] नहीं

अल्लाह रे उस शोख़ की रफ़्तार का आलम[5]
हर लम्हा[6] संभलता हुआ मयख्वार हो जैसे

मैं उस साक़ी पे ऐ 'आज़ाद'! सदक़े जिस की महफ़िल में
सुरूर आ भी चुका, आई नहीं लेकिन शराब अब तक

---

१ इकट्ठे २. शराबी मित्र ३. स्थान ४. शराब की मात्रा के अनुरूप ५. दामन ६. क्षण

## 'आतश'

फ़स्ले-शराब[1] आई, पियो सूफ़ियो शराब
बस हो चुकी नमाज़, मुसल्ला[2] उठाइये

मगर उसको फ़रेबे-नरगिसे-मस्ताना[3] आता है
उलटती हैं सफ़ें, गर्दिश में जब पैमाना आता है

हर शब शबे-बारात है, हर रोज़ रोज़े-ईद
सोता हूं हाथ गर्दने-मीना में[4] डाल के

## 'आबरू'

पीता नहीं शराब कभी बे वज़ू किये
क़ालिब[5] में मेरे रूह किसी पारसा की है

---

१. शराब पीने का मौसम २. नमाज़ पढ़ने की चटाई ३. नर्गिस के फूल जैसी मस्त आंखों का धोखा देना ४. सुराही की गर्दन में ५. शरीर

## आबिद अली 'आबिद'

बादा-नोशों[1] पे मुसिर[2], बादानोशी पे ख़फ़ा
महवे-हैरत[3] हूँ कि ये लोग भी क्या होते हैं

## 'आरज़ू' लखनवी

चश्मे-साक़ी में[4] खुमार आते ही पैमाना[5] बना
हाथ अंगड़ाई को उट्ठे और मयख़ाना बना

साक़ी तेरे मयख़ाने में जब हम नहीं होंगे
सब टूटे हुए जाम हमें याद करेंगे

हाथ से किसने सागर पटका, मौसम की बेकैफ़ी पर[6]
ऐसा बरसा टूट के बादल डूब चला मयख़ाना भी

---

१. मदिरापान २. आग्रही ३. हैरान ४. साक़ी की आँखों में ५. प्याला
६. मौसम के फीकेपन पर

## 'आसी'

अभी तो देखते हैं ज़र्फ़[1] बादाख्वारों का[2]
खुमो-सुबू की[3] भी ठहरेगी दौरे-जाम के बाद

मस्ती में कोई राज़ जो 'आसी' से फ़ाश[4] हो
माजूर[5] है अभी कि नया बादाख्वार[6] है

जनाबे-शेख[7] भी चुपके से कह गए आखिर
शराब रात को अकसर हलाल होती है

## 'इक़बाल' अलामा

### रुबाई

तेरे शीशे में[8] मय बाक़ी नहीं है
बता क्या तू मेरा साक़ी नहीं है
समुन्दर से मिले प्यासे को शबनम
बखीली[9] है ये रज़्ज़ाकी[10] नहीं है

---

१. सामर्थ्य २. मद्यपों का ३. शराब के मटके मटकियों की ४. प्रकट ५. विवश ६. शराब पीने वाला ७. आमान धर्मगुरु ८. बोतल में ९. कंजूसी १०. अन्न दाता-पन

## शे'र

मुहब्बत के लिए दिल ढूँढ कोई टूटने वाला
ये वो मय[1] है जिसे रखते हैं नाज़ुक आबगीनों में[2]

मेरी निगाह में वो रिन्द ही नहीं साक़ी
जो होशियारी-ओ-मस्ती में इम्तियाज़[3] करे

अगर न था तू शरीके-महफ़िल[4]
क़ुसूर तेरा है या कि मेरा
मेरा तरीक़ा नहीं कि रख लूँ
किसी की ख़ातिर मय-ए-शबाना[5]

## 'इक़बाल' सफ़ीपुरी

ये मेरा मज़ाक़े-तश्नालबी[6] भी
ले आया मुझे किस मंज़िल पर

---

१. मदिरा २. कांच के पात्रों में ३. फ़र्क़ ४. महफ़िल में शामिल ५. दूसरे दिन के लिए रात को बचाकर रखने वाली शराब ६. प्यासा रहने की अभिरुचि

## 'ऐश' टोंकवी

मयकदे के बामो-दर पर[1] किस बला का नूर[2] है
ये मेरा सागर[3] है रोशन या चिरागे-तूर[4] है
बेज़रूरत आप क्यों फ़िक्रे-मय-ओ-साग़र[5] करें
मयकदे का मयकदा अब बे पिये-मसरूर[6] है

## 'ओज'

खुद गिरे, लेकिन छलकने दी न मय
अपने सर ले ली बलाए जाम की

## 'क़तील' शिफ़ाई

### ग़ज़लें

शहर के वे आबरू लोगों से याराना भी है
लेकिन अपना मोतकिद[7] अब पीरे-मयख़ाना[8] भी है

---

१. छतों और दरवाज़ों पर २. प्रकाश ३. प्याला ४. तूर (नामक पहाड़) पर का चिराग़ (बिजली द्वारा प्रकट होने वाली आकाशवाणी) [illegible] तथा प्याले की चिन्ता ६. प्रसन्न ७. श्रद्धालु ८. शराब बेचने वाला

पाए-साक़ी पर' गिरे हैं यूं तो कितने बादानोश'
अपनी लग़ज़िश' में मगर इक शाने-रिन्दाना' भी है
उन की आंखों से न शायद हमको फ़ुर्सत मिल सके
वर्ना अपने हाथ में शीशा' भी पैमाना' भी है
क्यों झुलसते हो गमों की धूप में ऐ राहियो
सामने जब साया-ए-दीवारे-मयख़ाना' भी है

इक जाम खनकता जाम, कि साक़ी रात गुज़रने वाली है
इक होश-रुबा' इनआम, कि साकी रात गुज़रने वाली है
वो देख सितारों के मोती हर आन बिखरते जाते हैं
अफ़्लाक पे' है कुहराम, कि साक़ी रात गुज़रने वाली है
गो देख चुका हूं पहले भी नज़्ज़ारा दरिया-नोशी का"
इक और सला-ए-आम", कि साकी रात गुज़रने वाली है

ये वक़्त नहीं है बातों का पलकों के साये काम में ला
इल्हाम" कोई इल्हाम, कि साकी रात गुज़रने वाली है
मदहोशी में एहसास के ऊंचे ज़ीने से गिर जाने दे
इस वक़्त न मुझको थाम कि साक़ी रात गुज़रने वाली है

---

१. साक़ी के पैरों पर २. शराबी ३ लड़खड़ाहट ४. मयशों की शान ५. बोतल ६. प्याला ७. मधुशाला की दीवार का छाया ८ होश उड़ा देने वाला ९. आकाशों पर १०. दरिया (बहुत अधिक शराब) पीने का ११. मयक़शों मिलने वाला १२. देववाणी

पीता हूँ, पै दिनरात नहीं पीता हूँ
जब तक न हो बरसात, नहीं पीता हूँ
साक़ी की इनायत[1] तो बरहक़[2] लेकिन
मयख़ाने की ख़ैरात नहीं पीता हूँ

## शे'र

ये मयख़ाना है इसमें जो भी आ जाए वो अपना है
ये मयख़ाना है, इसमें कोई बेगाना नहीं आता
सबू[3] हम उठके ले लेंगे अभी ख़ुद दस्ते साक़ी से[4]
मगर कुछ देर हम तक दौरे-पैमाना नहीं आता

मय नहीं है न सही, मयकदा फिर मयकदा है
जाम ख़ाली ही उठाओ कि ज़रा जी बहले
करके लबरेज़ मय-नाब[5] से अपना चुल्लू
मेरे होंटों से लगाओ कि ज़रा जी बहले

कौसर[6] पे जाके शेख़[7] से कह दो, वुज़ू करें
फिर उसके बाद ज़िक्रे-मय-मुश्क बू[8] करें

२. उचित ३. शराब की मटकी ४. साक़ी के हाथ से ५. शराब
. . की नहर ७. धर्म गुरु ८. सुगन्धित मदिरा

इतनी मिली कि होंठ भी मुश्किल से तर हुए
साक़ी को ज़िद है मस्ता में फिर भी ग़ुलू[1] करें

कौन समझेगा मेरी तश्नालबी[2] का मफ़हूम[3]
जाम उठाया है तो साक़ी को हया[4] आती है

## 'करम' हैदराबादी

गुज़री जो मयख़्वारों पर[5], साक़ी आम न होने पाए
वर्ना जाम लहू रोयेंगे, पैमाने फ़रियाद करेंगे
ये महरूमी[6] आख़िर कब तक ! सब्र की कोई हद होती है
रिन्द[7]—जो अब भी बन्द रहेंगे, मयख़ाने फ़रियाद करेंगे

आज सरे-महफ़िल[8] जो उसने तोड़ा जाम तो होश आया
पीरे-मुग़ाँ[9] के साथ हमारे कैसे कुछ याराने थे

वाइज़ ख़ता मुआफ़ कि रिन्दाने-मयकदा[10]
दिल के सिवा किसी का कहा मानते नहीं

---

१. अतिशयोक्ति २. होंठों की प्यास ३. अर्थ ४. लज्जा ५. मद्यपों पर ६. वंचितता ७. मद्यप ८. भरी महफ़िल में ९. मदिरा विक्रेता १० मधुशाला के मद्यप

पीता हूं, पे दिनरात नहीं पीता हूं
जब तक न हो सौगात, नहीं पीता हूं
साक़ी की इनायात[1] तो बरहक़[2] लेकिन
मयख़ाने की खैरात नही पीता हू

## शे'र

ये मयखाना है इसमें जो भी आ जाए वो अपना है
ये मयखाना है, इसमे कोई बेगाना नहीं आता
सबू[3] हम उठके लेलेंगे अभी खुद दस्ते साक़ी से[4]
अगर कुछ देर हम तक दौरे-पैमाना नही आता

मय नहीं है न सही, मयकदा फिर मयकदा है
जाम खाली ही उठाओ कि ज़रा जी बहले
करके लबरेज़ मय-नाब[5] से अपना चुल्लू
मेरे होंटो से लगाओ कि ज़रा जी बहले

कौसर[6] पे जाके शैख़[7] से कह दो, वुज़ू करें
फिर उसके बाद ज़िक्रे-मय-मुश्क बू[8] करें

---

१. कृपाएँ २. उचित ३. शराब की मटकी ४. साक़ी के हाथ से ५. शराब
६. जन्नत की शराब की नहर ७. धर्म गुरु ८. सुगन्धित मदिरा

इतनी पिला कि होंट भी मुश्किल से तर हुए
साक़ी को ज़िद है नश्शा में फिर भी गुलू[1] करें

कौन समझेगा मेरी तश्नालबी[2] का मफ़हूम[3]
जाम उठाया है तो साक़ी को दुआ[4] मांगी है

## 'करम' हैदराबादी

गुज़री जो मयख़्वारों पर[5], साक़ी आम न होने पाए
वर्ना जाम लहू रोयेंगे, पैमाने फ़रियाद करेंगे
ये महरूमी[6] आख़िर कब तक ! सब्र की कोई हद होती है
रिन्द[7]—जो अब भी बन्द रहेंगे, मयख़ाने फ़रियाद करेंगे

आज सरे-महफ़िल[8] जो उसने तोड़ा जाम तो होश आया
पीरे-मुग़ां[9] के साथ हमारे कैसे कुछ याराने थे

वाइज़ ख़ता मुआफ़ कि रिन्दाने-मयकदा[10]
दिलके सिवा किसी का कहा मानते नहीं

---

१. अतिशयोक्ति २. होंठों की प्यास ३. अर्थ ४. प्रार्थना ५. मयख़्वारों पर ६. वंचितता ७. शराबी ८. भरी महफ़िल में ९. मदिरा विक्रेता १०. मधुशाला के अन्दर

## 'ख़ुमार' अनसारी

वो लोग जिनमें जुरअते-बादाकशी[1] न थी
साक़ी की इक निगाह से मख़मूर[2] हो गए

## 'ख़ुमार' बाराबंकवी

दिया है मदभरी आँखों यहाँ ये साक़ी ने
हराम कहते हैं जिसको ये वो शराब नहीं

## 'ग़ालिब'

कहाँ मयख़ाने का दरवाज़ा 'ग़ालिब' और कहाँ वाइज़[3]
पर इतना जानते हैं कल वो जाता था कि हम निकले

मैं और बज़्मे-मय[4] से यूँ तश्नाकाम[5] आऊँ
गर मैंने की थी तौबा साक़ी को क्या हुआ था

---

१. मदिरा पान का साहस २. मस्त ३. धर्मोपदेशक ४. शराब की महफ़िल ५. प्यासा

...ालिब' छुटी शराब पर अब भी कभी-कभी
...ता हूं रोज़े-अब्रो-शबे-माहताब[1] में

...ब मयकदा छुटा तो फिर क्या जगह की क़ैद
...स्जिद हो, मदरसा हो, कोई ख़ानक़ाह हो

...न को क्यों बहुत पीते, बज़्मे-ग़ैर में[2] या रब
...ज ही हुआ मन्ज़ूर, उनको इम्तहां अपना

...ाहिद हुआ है गर्दने-मीना[3] पे ख़ूने-ख़ल्क़[4]
...रज़े है मौजे-मय[5] तेरी रफ़्तार देख कर

...मय से ग़रज़ निशात[6] है किस रू-सियाह[7] को
...क-गूना[8] बेख़ुदी[9] मुझे दिन रात चाहिये

हमसे खुल जाओ बवक़्ते-मयपरस्ती[10] एक दिन
वर्ना हम छेड़ेंगे रख के उज़्रे-मस्ती[11] एक दिन
क़र्ज़ की पीते थे मय और समझते थे कि हां
रंग लाएगी हमारी फ़ाक़ामस्ती एक दिन

---

१. जिस दिन बादल छाते हैं और जिस रात को चांद निकलता है २. प्रतिद्वन्द्वी की महफ़िल में ३. सुराही की गर्दन ४. जनता का रक्तपात ५. शराब की लहर ६. आनन्द ७. काले मुंह वाला (अभागा) ८. एक प्रकार की ९. आत्म-विसर्जन १०. शराब पीते समय ११. मस्त होने की आड़ लेकर

पीता हूं, पे दिनरात नहीं पीता हूं
जब तक न हो सौगात, नहीं पीता हूं
साक़ी की इनायात[1] तो बरहक़[2] लेकिन
मयख़ाने की ख़ैरात नहीं पीता हूं

## शे'र

ये मयख़ाना है इसमें जो भी आ जाए वो अपना है
ये मयख़ाना है, इसमें कोई बेगाना नहीं आता
सबू[3] हम उठके लेलेंगे अभी ख़ुद दस्ते साक़ी से[4]
अगर कुछ देर हम तक दौरे-पैमाना नहीं आता

मय नहीं है न सही, मयकदा फिर मयकदा है
जाम ख़ाली ही उठाओ कि ज़रा जी बहले
करके लबरेज़ मय-नाब[5] से अपना चुल्लू
मेरे होंटों से लगाओ कि ज़रा जी बहले

कौसर[6] पे जाके शैख़[7] से कह दो, वुज़ू करें
फिर उसके बाद ज़िक्रे-मय-मुश्क बू[8] करें

---

१. कृपायें २. उचित ३. शराब की मश्की ४. साक़ी के हाथ से ५. शराब
६. जन्नत की शराब की नहर ७. धर्म गुरु ८. सुगन्धित मदिरा

हैं रिन्दो-मोहतसिब में[1] तो राज़े-अज़ल से[2] बैर
ऐ शैख़े-शहर[3] इतना भी तुम जानते नहीं

## 'क़ैस' देहल्वी

बोतल खुली जो हज़रते-ज़ाहिद[4] के वास्ते
मारे ख़ुशी के काग भी दो गज़ उछल गया

## 'क़ाइम' चांदपुरी

मजलिसे-वा'ज़[5] तो ता-देर[6] रहेगी क़ाइम
ये है मयख़ाना अभी पीके चले आते हैं

## 'कैफ़ी' आज़मी

कहीं साग़र[7] लबालब हैं, कहीं ख़ाली प्याले हैं
ये कैसा दौर है साक़ी, ये क्या तक़सीम[8] है साक़ी

---

१. मद्यप और धर्माध्यक्ष में २. आदिकाल से ३. नगर निव...
४. श्रीमान विरक्त महोदय ५. धर्मोपदेश की सभा ६. देर तक ७. प्या...
८. बटवारा

## 'कैफ़ी' दतात्रय

यार पैमाने[1] अगर कर गए ख़ाली, गम क्या ?
अब भी अब्र[2] आता है और ख़ुम मे[3] शराब और भी है

## 'ख़ंजर'

साकिया टाल न प्यासा मुझे मयख़ाने से
मेरे हिस्से की छलक जायेगी पैमाने से

## 'ख़याल'

मुफ़्त दो घूंट पिला दे तेरे सदके साक़ी
हम गरीबों से कहीं दाम दिये जाते हैं

---

१. प्याले २. बादल ३. शराब के मटके में

## 'ख़ुमार' अनसारी

वो लोग जिनमें जुरअते-बादाकशी[1] न थी
साक़ी की इक निगाह से मख़्मूर[2] हो गए

## 'ख़ुमार' बारहबंकवी

दिखा के मदभरी आँखें कहा ये साक़ी ने
हराम कहते हैं जिसको ये वो शराब नहीं

## 'ग़ालिब'

कहाँ मयख़ाने का दरवाज़ा 'ग़ालिब' और कहाँ वाइज[3]
पर इतना जानते हैं कल वो जाता था कि हम निकले

मैं और बज़्मे-मय[4] से यूँ तश्नाकाम[5] आऊँ
गर मैंने की थी तौबा साक़ी को क्या हुआ था

१. पान का साहस २. मस्त ३. धर्मोपदेशक ४. शराब की
५. प्याला

ग़ालिब' छुटी शराब पर अब भी कभी-कभी
पीता हूं रोज़े-अब्रो-शबे-माहताब[1] में

जब मयकदा छुटा तो फिर क्या जगह की कैद
मस्जिद हो, मदरिसा हो, कोई खानकाह हो

मय वो क्यों बहुत पीते, बज़्मे-ग़ैर में[2] या रब
आज ही हुआ मन्ज़ूर, उनको इम्तिहा अपना

साबित हुआ है गर्दने-मीना[3] पे खूने-खल्क़[4]
लरज़े है मौजे-मय[5] तेरी रफ़्तार देख कर

मय से गरज निशात[6] है किस रु-सियाह[7] को
इक-गूना[8] बेखुदी[9] मुझे दिन रात चाहिये

हमसे खुल जाओ बवक्ते-मयपरस्ती[10] एक दिन
वर्ना हम छेड़ेंगे रख के उज्रे-मस्ती[11] एक दिन
क़र्ज़ की पीते थे मय और समझते थे कि हां
रंग लाएगी हमारी फ़ाक़ामस्ती एक दिन

---

१. जिस दिन बादल छाते हैं और जिस रात को चांद निकलता है
२. प्रतिद्वन्द्वी की महफ़िल में ३. सुराही की गर्दन ४. जनता का रक्तपात
५. शराब की लहर ६. आनन्द ७. काले मुंह वाला (अभागा) ८. एक प्रकार की
९. आत्म-विसर्जन १०. शराब पीते समय ११. मस्त होने की आड़ लेकर

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मुझ तक कब उनकी बज़्म[4] में आता था दौरे-जाम
साक़ी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में

वाइज़[5] न तुम पियो, न किसी को पिला सको
क्या बात है तुम्हारी शराबे-तहूर[6] की

ज़ाहिर है कि घबरा के न भागेंगे नकीरैन[7]
हाँ मुँह से मगर बादा-ए-दोशीना[8] की बू आए

कहते हुए साक़ी से हया आती है वर्ना
है यूँ कि मुझे दुर्दे-तहे-जाम[9] बहुत है

१. छिपने की शक्ति २. शराबी बनने को ३. रात ४. महफ़िल में ५. धर्मोपदेशक ६. जन्नत की शराब ७. मृत्यु के फ़रिश्ते ८. पिछली रात की बचाई हुई शराब ९. प्याले के नीचे की तलछट

हरचन्द[1] हो मुशाहिदा-ए-हक़[2] की गुफ़्तगू
बनती नहीं है बादा-ओ-सागर कहे बगैर

रात पी ज़मज़म[3] पे मय और सुब्ह दम
धोये धब्बे जामा - ए - अहराम[4] के

जाफ़िज़ा[5] है बादा[6], जिसके हाथ में जाम आ गया
सब लकीरें हाथ की गोया रगे-जां[7] हो गईं

और ले आये बाज़ार से, अगर टूट गया
सागरे-जम[8] से मेरा जामे-सिफ़ाल[9] अच्छा है

ये मसाइले-तसव्वुफ़[10], ये तेरा बयान[11] 'ग़ालिब'
तुझे हम वली समझते जो न बादाख़्वार[12] होता

रात के वक़्त मय पिये साथ रक़ीब[13] को लिए
आए वो यूं ख़ुदा करे पर न करे ख़ुदा कि यूं

---

१. यद्यपि २. सत्य के दर्शन (आध्यात्मक) ३. मक्के का पवित्र कुआं ४. हज के वक्त पहना जाने वाला कपड़ा ५. आयु-वर्द्धक ६. शराब ७. शाहरग ८. सीपी का पवित्र प्याला ९. मिट्टी का प्याला १०. अध्यात्मक समस्यायें ११. व्याख्या १२. शराबी १३. प्रतिद्वन्दी

ये तश्ना लब[1] न गर्क़ हों ख़ुद ही तो और बात
यूं तो शराब इनके प्यालों मे कम नहीं

## 'जफ़र' बहादुरशाह

वो बेहिजाब[2] जो कल पी के या शराब आया
अगर्चे मस्त था मैं, पर मुझे हिजाब[3] आया

हमें सागरो-बादा[4] के देने मे अब
करे देर जो साक़ी तो हाय गज़ब
कि ये अह्दे-निशात[5], ये दौरे-तरब[6]
न रहेगा जहा मे सदा, न रहा

## सिराजुद्दीन 'जफ़र'

दरे-मयख़ाना[7] से दीवारे-चमन[8] तक पहुंचे
हम ग़ज़ालों के[9] तआक़ुब में[10] ख़तन[11] तक पहुंचे

---

१. प्यासे होंठ २. बेपर्दा (निर्लज्ज) ३. लज्जा ४. प्याला और शराब ५-६. हर्ष तथा आनन्द का ज़माना (समय) ७ मधुशाला का दरवाज़ा ८. बाग़ की दीवार ९. ख़ुश्क हिरनों या हिरनियों के १०. पीछा करते हुए ११. मध्य एशिया

हाथ मयख्वारों के बेक़स्द[1] उठे थे लेकिन
इत्तिफ़ाक़न[2] तेरे गेसू की[3] शिकन तक पहुंचे
यूं सरे-राह भरे बैठे है मयकश[4] कि बहार[5]
अब के आए तो सलामत न चमन तक पहुंचे

उठा सागर कि मयख्वारों के आगे
नहीं चलती किसी की तमतराक़ी[6]
संभलकर ऐ खिज़ा के कारवानो
बहारें हैं मेरे सागर में बाक़ी

## 'जलाल'

शब को मय खूब सी पी, सुबह को तौबा करली
रिन्द[4] के रिन्द रहे, हाथ से जन्नत न गई

यूं तो पीता नही, पी लेता हूं गाहे-गाहे[7]
वो भी थोड़ी-सी मजा मुंह का बदलने के लिए

खबर क्या किसने शेखो-बिरहमन[8] में भगड़े डाले हैं
मगर सब बज़्मे-रिन्दां[9] में तुम्हारा नाम लेते हैं

---

१. निरुद्देश्य २. संयोगवश ३. केशों की ४. मद्यप ५. बसन्त ऋतु ६. मदद ७. कभी-कभी ८. मुल्ला और पण्डित ९. नशेड़ों की महफ़िल

ज़ाहिद[1] को रिन्द उभार के लाये हैं राह पर
कुछ-कुछ मगर करामते-पीरे-मुगा[2] भी है

## जहूर नजर

वो रिन्द हैं कि अगर मयकदे से कुछ न मिला
तो खुद को शीशा-ए-मय[3] मे उतार आए हैं

## 'जलील' मानिकपुरी

दे रहे हैं मय वो अपने हाथ से
अब ये शै इनकार के काबिल नही

भला तौबा का मयखाने में क्या जिक्र
जो है भी तो कही टूटी पड़ी है

मेरी तौबा भी कोई तौबा है
जब बहार आई तोड डाली है

---

१. निरक्त  २. शराब विक्रेता का चमत्कार  ३. शराब की बोतल

सच कहा था तूने ज़ाहिद[1] क़त्ले-क़ाबिल[2] है शाय
हम भी कहते थे, यही जब तक बहार आई न थी

कुफ्रे-ज़ाहिद[3] तोड़ना क्या बात है
सिर्फ इक मय ही पिलाई जाएगी

बात साकी की न टाली जाएगी
तौबा करके तोड़ डाली जाएगी

मय की, मयख़ाने की, ख़ुम[4] की, जाम की, मीना[5] की ख़ै
मस्त आखों का तअल्लुक एक पैमाना[6] हमें

वाइज़[7] छेड़ो न रिन्दों को[8] बहुत
ये समझ लो कि पिये बैठे हैं

मैंने पूछा था कि है मंज़िले-मक़सूद कहां
ख़िज़्र[9] ने राह बताई मुझे मयख़ाने की
मस्त कर देती है पहले ही निगाहे-साकी[10]
आस के सामने चलती नहीं पैमाने की[11]

---

१. विरक्त २. इनाइल ३. विरक्त की नास्तिकता ४. शराब का मटका
५. सुराही ६. प्याला ७. धर्मोपदेशक ८. मस्तों को ९. दीर्घ आयु वाला एक
पैगम्बर १०. साकी की नज़र ११. प्याले की

बेखुदी में[1] भी यही मुह से निकलता है 'जलील'
शीशे[2] आबाद रहें खैर हो मयखाने को

मस्त करना है तो खुम[3] मुह से लगा दे साकी
तू पिलायेगा कहा तक मुझे पैमाने से
पारसाई का बहुत करते थे इज़हार[4] 'जलील'
झूमते आज चले आते है मयखाने से

अदा-अदा तेरी मौजे-शराब[5] हो के रही
निगाहे-मस्त[6] से दुनिया खराब होके रही
'जलील' फस्ले-बहारों[7] की देखिए तासीर[8]
गिरी जो बूद घटा से शराब हो के रही

मौसमे-गुल में[9] अजब रंग है मयखाने का
शीशा[10] झुकता है कि मुह चूम ले पैमाने का[11]
मैं समझता हू तेरी अश्वागरी को[12] साकी
काम करती है नजर, नाम है पैमाने का

बू-ए-मय[13] पा के मैं चलता हू मयखाने को
एक परी थी कि लगा ले गई दीवाने को

---

१. आत्मविसर्जन की स्थिति में २. बोतलें ३. शराब का मटका ४. प्रकटन ५. शराब की लहर ६. मस्त नजर ७. बसन्त ऋतु ८. प्रभाव ९. बसन्त ऋतु में १०. बोतल ११. प्याले का १२. नाज-नखरों को १३. शराब की महक

कोई ऐसी भी है सूरत तेरे मरके साक़ी
हम न हों फिर भी उठाकर मेरे मयख़ाने को

अब ध्यान गुज़रता है गिराते हुए साग़र[1]
रिन्दों को नज़र लग गई साक़ी की नज़र को

## 'ज़ाहिद' अलहसन ज़ाहिद

नर्गिसे-मस्त[1] के सताए हैं
इसलिए मयकदे में आए हैं

## 'जिगर' मुरादाबादी

### ग़ज़लें

साक़ी की हर निगाह पे बल खा के पी गया
लहरों से खेलता हुआ लहरा के पी गया
बेकैफ़ियत[1] के कैफ़ से घबरा के पी गया
तौबा को तोड़-ताड़ के थर्रा के पी गया
ज़ाहिद[2] ! ये मेरी शोख़ी-ए-रिन्दाना[3] देखना
रहमत[4] को बातों-बातों में बहला के पी गया

---

१. प्याला २. मस्तों की ३. काल चक्र ४. मनहूसता ५. विरक्त
६. मस्तों की चंचलता ७ ख़ुदा

सरमस्ती-ए-अजल[1] मुझे जब याद आ गई
दुनिया-ए-एतिबार[2] को ठुकरा के पी गया
आज़ुर्दगी-ए-खातिरे-साक़ी[3] को देखकर
मुझ को वो शर्म आई कि शर्मा के पी गया
ऐ रहमते-तमाम[4] ! मेरी हर खता मुआफ
मैं इन्तिहा-ए-शौक[5] मे घबरा के पी गया
पीता बगैर इज्न[6] ये कब थी मेरी मजाल
दर-पर्दा चश्मे-यार[7] की शह पा के पी गया
उस जाने-मयकदा[8] की कसम बारहा 'जिगर'
कुल आलमे-वसीत पे मैं छा के पी गया
मिलती है उम्र-अबद[9] इश्क के मयखाने में
ऐ अजल[10] तू भी समा जा मेरे पैमाने मे
हरम-ओ-देर[11] मे रिन्दों का[12] ठिकाना ही न था
वो तो ये कहिये अमा[13] मिल गई मयखाने में
आज तो कर दिया साकी ने मुझे मस्त-अलस्त
डाल कर खास निगाहें मेरे पैमाने में
हज्जो-ए-मय ने[14] तेरा ऐ शेख[15] भरम खोल दिया
तू तो मस्जिद मे नीयत तेरी मयखाने में

---

१. आदिकालीन मतवालापन २ विश्वास की दुनिया ३. साक़ी की अप्रसन्नता ४ खुदा ५. शौक की चरम सीमा ६. आज्ञा ७ मित्र (प्रेयसी) की आख ८ मधुशाला की जान (साक़ी) ९. अन्तकाल तक का जीवन १०. मृत्यु ११. मस्जिद-मन्दिर १२. मद्यपों का १३. पनाह, शरण १४. शराब की बुराई करने १५. धर्मगुरु, मुल्ला

मशवरे होते हैं जो शैख़ो-बिरहमन में 'जिगर'
रिन्द सुन लेते हैं बैठे हुए मयख़ाने में

## शे'र

पी के यक[1] जामे-शराबे-शौक़[2] आंखें खुल गईं
देखता हूं जिस तरफ़ मयख़ाना ही मयख़ाना है

मयख़ाना है उसी का, ये दुनिया उसी की है
जिस तश्ना-लब के[3] हाथ में जामे-शराब है
ऐ मोहतसिब[4]! न फेंक, मेरे मोहतसिब न फेंक
ज़ालिम! शराब! अरे ज़ालिम! शराब है

मुझे उठाने को आया है वाइज़े-नादां[5]
जो उठ सके तो मेरा साग़रे-शराब[6] उठा
किधर से बर्क़[7] चमकती है देखें ऐ वाइज़
मैं अपना जाम उठाता हूं तू किताब[8] उठा

तौबा तो कर चुका था मगर इसका क्या इलाज
वाइज़ की ज़िद ने फिर मुझे मजबूर कर दिया

---

१ एक २. इच्छा रूपी शराब का प्याला ३. प्यासे होंठों वाले ४. [illegible] ५. नादान धर्मोपदेशक ६. शराब का प्याला ७. बिजली ८. कुरान (तूर पर ख़ुदा से हुई मूसा की बातों की ओर संकेत है)

पहले शराब ज़ीस्त[1] थी अब ज़ीस्त है शराब
कोई पिला रहा है पिये जा रहा हूं मैं

इक जगह बैठ के पी लू मेरा दस्तूर नही
मयकदा तग बना दू मुझे मन्ज़ूर नहीं

पीने वाले एक ही दो हो तो हों
मुफ्त सारा मयकदा बदनाम है

शबाब[2] मयकश[3], जमाल[4] मयकश,
ख़याल मयकश, निगाह मयकश
खबर वो रक्खेंगे क्या किसी की,
उन्हे खुद अपनी खबर नही है

साकी की चश्मे-मस्त का[5] क्या कीजिये बयां
इतना सरूर था कि मुझे भी सरूर था

ये मयकशी है तो फिर शाने-मयकशी क्या है
बहक न जाए जो पीकर, वो रिंद[6] ही क्या है

---

१. जिन्दगी २. यौवन ३. शराबी ४. सौन्दर्य ५. मस्त आंखों का
६. मद्यप

इक जाम आख़िरी तो पीना है और गा
अब दस्ते-शौक़[1] काँपे या पाँव लड़खड़ा

ग़र्क़ कर दे तुझको ज़ाहिद, तेरी दुनिया को ख़
कम से कम इतनी तो हर मयकश के पैमाने मे

मयकशो मुज़्दा[2] कि बाक़ी न रही क़ैदे-मका[3]
आज इक मौज[4] बहा ले गई मयख़ाने की

री चश्मे-मस्त[5] की क्या कहूं कि नज़र-नज़र है फ़ुसूं-
तमाम होश, ये सब जुनूं,[7] उसी एक गर्दिशे जा
ही चश्मे-हूर[8] फड़क गई; अभी पी न थी कि बहक
भी यक-ब-यक जो छलक गई किसी रिन्दे-मस्त के जा

ये ख़ानक़ाह नही पी भी जा तू ऐ ज़ाहिद !
ये मयकदा है यहां एहतिराज़[9] रहने दे

मैं तो जब मानूं मेरी तौबा के बाद
करके मजबूर पिला दे साक़ी

---

१ आकांक्षारूपी हाथ २. मुबारिक हो ३. जगह की क़ैद या
४. लहर ५. मस्त आँख ६. जादू-जादू ७. उन्माद ८. हूर की
९. बचना

## 'गुस्ताख़' रामपुरी

सदसाला[1] दौरे-चर्ख़[2] था सागर का एक जाम
निकले जो मयकदे से तो दुनिया बदल गई

## जुबेर रिजवी

चाहते हैं रहे-मयख़ाना न क़दमों को मिले
लेकिन इस शोख़ी-ए-रफ़्तार[3] पे काबू भी नहीं

## 'जेब' उस्मानिया

### रुबाई

तुझसे बढ़कर है कहीं उनका मुक़ाम[4] ऐ साक़ी
मस्त रहते है जो बेबादा-ओ-जाम[5] ऐ साक़ी
क़तरे-क़तरे को फिरें तेरे सुबूकश[6] लाचार
हैं ये किसके लिए ग़ैरत का मुक़ाम ऐ साक़ी

---

१. सौ वर्षीय २. कालचक्र ३ चाल की चपलता ४. स्थान
५. शराब तथा प्याले के बिना ६. शराब के मटके पी जाने वाले

बेलों में झलक रही हैं बूंदें साक़ी
शीशों से[1] टपक रही हैं बूंदें साक़ी
दे जाम कि बर्ग-हाए सब्ज़ो-तर पर[2]
रह-रह के खनक रही हैं बूंदें साक़ी

## शे'र

ये सुन के हमने मयखाने में अपना नाम लिखवाया
जो मयकश लड़खड़ाता है वो बाज़ू थाम लेते हैं

अर्ज़ो-समा[3] को सागरो-पैमाना कर दिया
रिन्दों ने[4] कायनात[5] को मयखाना कर दिया

कश्ती-ए-मय[6] को हुक्मे-रवानी[7] भी भेज दो
जब आग भेज दी है तो पानी भी भेज दो

## 'ज़ौक़'

ऐ 'ज़ौक़' देख दुख्तरे-रज़[8] को न मुंह लगा
छुटती नहीं है मुंह से ये काफिर लगी हुई

१. गुच्छों से २. हरे और तर पत्तों पर ३. ज़मीन और आसमान
४. मयकशों ने ५. ब्रह्माण्ड ६. शराब की कश्ती ७. चलने का आदेश
८. अंगूर की बेटी (शराब)

जाहिद[1] शराब पीने से काफिर हुआ मैं क्यों
क्या डेढ़ चुल्लू पानी में ईमान बह गया

रिन्दे-खराब हाल को[2] जाहिद न छेड़ तू
तुझको पराई क्या पड़ी अपनी नबेड़ तू

हरम[3] को जाए जाहिद हम तो मयखाने को चलते हैं
मुबारक उसको तौफे-काबा[4], हमको दौरे-साग़र[5] हो

बे बाद[6] गुलिस्तां मे पीते हैं लहू मयकश
साक़ी ने दमे-इशरत[7] क्या देर लगाई है

दरवाजा मयकदे का न कर बन्द मोहतसिब[8]
जालिम खुदा से डर कि दरे-तौबा[9] बाज़ है"

'ज़ौक़' जो मदरिसे[11] के बिगड़े हुए है मुल्ला
उनको मयखाने में ले आओ, सवर जायेंगे

पिला मय आशकारा[12] हमको, किसकी साकिया चोरी
खुदा की जब नही चोरी तो फिर बन्दे की क्या चोरी

---

१. विरक्त २. दीन अवस्था वाले मद्यप को ३. का'बा ४. का'बे की परिक्रमा ५. प्याले की गर्दिश ६. हवा के बग़ैर ७. आनन्द के समय ८. रसाध्यक्ष ९. तौबा का दरवाजा १०. खुला ११. विद्यालय १२. खुलेआम

चश्मे-साक़ी[1] आ गई है याद जिस मयनोश[2] को
जाम छलका, शीशा-ए-मय[3] हिचकियाँ लेने लगा

## 'ताबां' ग़ुलाम रब्बानी

मेरी सहबा-परस्ती[4] मूर्दे-इल्ज़ाम[5] है साक़ी
ख़िरद[6] वालों की महफ़िल में जुनूँ[7] बदनाम है साक़ी
सूए-मंज़िल[8] बढ़े जाता हूँ मयख़ाना ब मयख़ाना
मज़ाके-जुस्तजू[9] तश्नालबी[10] का नाम है साक़ी

भर आई आँख तो अक्सर किसी के नाम के साथ
मगर वो अश्क[11] जो छलका किये हैं जाम के साथ

बड़े अज़ाब में है जान बादाख़्वारों की[12]
कि ज़िक्रे-जाम[13] हुआ, दौरे-जाम[14] आ न सका

ख़राब जल्वा-ए-साक़ी, ख़राब जल्वा-ए-मय
बक़ैदे-होश[15] कोई मयकदे से जा न सका

---

१. साक़ी की आँख या नज़र २. मद्यप ३. शराब की बोतल ४. मदिरा-पूजन ५. इल्ज़ाम की भागी ६. बुद्धि ७. उन्माद ८. मंज़िल की ओर ९. तलाश की अभिरुचि १०. होंठों की प्यास (पिपासा) ११. आँसू १२. मद्यपों की १३. प्याले की चर्चा १४. प्याले की गर्दिश १५. होश में

# शे'र

मोहतसिब संगे-जफ़ा[1] तेरे, मयख़ाने में
कौन सा दिल था कि शीशे की तरह चूर न था

उठ गये शैख़जी तुम मजलिसे-रिन्दां[2] से शिताब[3]
हम से कुछ ख़ूब मदारात[4] न होने पाई

साक़िया यां चल रहा है चल-चलाओ
जब तलक बस चल सके साग़र[5] चले

कभी तुम भी किया है दिल किसी रिन्दे-शराबी का
भिड़ा दे मुंह से मुंह साक़ी हमारा और गुलाबी का[6]

तरदामनी पे[7] शैख़ हमारी न जाइए
दामन निचोड़ दें तो फ़रिश्ते वुज़ू करें

दे वो शराब साक़ी कि ता,रोज़े-रस्तख़ेज़[8]
जिसके नशे का काम न पहुंचे ख़ुमार तक

---

१. निष्ठुरता रूपी पत्थर २. शराबियों की महफ़िल ३. जल्दी ४. मेहमान नवाज़ी, आतिथ्य ५. शराब का प्याला ६. शराब की सुराही का ७. भीगे दामन पर ८. प्रलय के दिन तक

दे ले जो कुछ कि शीशे[1] में बाक़ी शराब हो
साक़ी है तंग अरसा-ए-फ़ुरसत[2] शिताब हो[3]

सल्तनत[4] पर नहीं है कुछ मौकूफ़[5]
जिस के हाथ आये जाम वो जम[6] है

साक़ी मेरे भी दिल की तरफ़ टुक निगाह कर
लब-तश्ना[7] तेरी बज़्म[8] में ये जाम रह गया

## 'दाग़' देहलवी

### ग़ज़ल

लग चली बादे-सबा[9] क्या किसी मस्ताने से
झूमती आज चली आती है मयख़ाने से
रूह किस मस्त की प्यासी गई मयख़ाने से
मय उड़ी जाती है साक़ी तेरे पैमाने से
गिर पड़ा हूं निगहे-मस्त[10] से चक्कर खा कर
साक़िया पहले उठा तू मुझे पैमाने से

---

१. बोतल में २. फुर्सत का समय ३. जल्दी हो ४. बादशाहत ५. आधारित ६. जम-जमशेद, ईरान का एक बादशाह जिनके पास संसार का सब दृश्य था ७. प्यासा ८. महफ़िल ९. प्रभात समीर १०. मस्त नज़र

जब 'दाग़' को ढूंढा किसी मयख़ाने में पाया
पर मैं कभी उस मर्द-ख़ुदा को नहीं देखा

मयख़ाने के क़रीब है मस्जिद भले को 'दाग़'
हर एक पूछता है कि "हज़रत इधर कहाँ?"

लुत्फ़े-मय[1] तुझसे क्या कहूँ ज़ाहिद
हाय, कमबख़्त! तू ने पी ही नहीं

तक़्सीर[2] मय-फ़रोश की[3] ऐ मुहतसिब[4] नहीं
मै ख़ुद उड़ के जाती है मय-ख़्वार[5] की तरफ़

साक़िया तश्नगी[6] की ताब[7] नहीं
ज़हर दे दे मगर शराब नहीं

मोहतसिब[4] तोड़ के शीशा[8] न बहा मुफ़्त शराब
अरे कमबख़्त छिड़क दे इसे मय-ख़्वारों पर

वाइज़ की बज़्मे-वा'ज़[9] में क्या भीड़-भाड़ थी
इतने में रिन्द[10] आए तो मैदान साफ़ था

---

१. शराब का आनन्द २. ग़लती ३. शराब बेचने वाले की ५. शराब पीने वाला ६. प्यास ७. सामर्थ्य ८. बोतल १०. मद्यप

को तर्क-मय तो[1] माइले-पिंदार हो गया[2]
मैं तौबा करके और गुनहगार हो गया

ईमान कुछ वुजू तो नहीं है कि टूट जाए
ऐ शेख[3] क्या हुआ जो मैं तौबा-शिकन[4] हुआ

हजरते-जाहिद[5] हर इक नश्शे को आदत शर्त है
मर न जायेंगे शरावे-चश्मा-ए कौसर से[6] आप ?

कभी झुकता हूँ शीशे[7] पर कभी गिरता हूँ साग़र पर[8]
मेरी बेहोशियों से होश साकी के बिखरते हैं

देखना पीरे-मुग़ा[9] हजरते-जाहिद[10] तो नहीं
कोई बैठा नजर आता है पसे-खुम[11] मुझको

भला हो पीरे-मुग़ा का, इधर निगाह मिले
फकीर हैं, कोई चुल्लू, खुदा की राह मिले

---

१. शराब छोड़ी तो २. आत्मगौरव करने लगा ३ मुल्ला ४. शराब पीने की तौबा तोड़ने वाला ५ विरक्त महोदय ६. जन्नत में बहने वाली शराब से ७ बोतल ८. प्याले पर ९. मदिरा-विक्रेता १० विरक्त महोदय ११. शराब के मटके के पीछे

इस म[illegible] में बहुत 'दाग़' बहक जाते थे
सुनते हैं आज [illegible] गए मदमाने में

# शे'र

तर दामने-मग़फ़िरत[1] से नहीं दूर ज़ाहिदो[2]
डूबे गुनाह बादाकशों के[3] शराब में
ऐ शैख़[4] जो बनाते मय-ए-इश्क़ को हराम
ऐसे के दो मसाए भिगो कर शराब में

मय पी तो यहाँ तौबा भी हो जाएगी ज़ाहिद
कमबख़्त क़यामत अभी आई नहीं जाती

मय तो हलाल है जो पिये ढब से बादानोश
मैं तौबा कर के और पशेमान[5] हो गया

वाइज़ बड़ा मज़ा हो अगर यूँ अज़ाब हो
दोज़ख़ में पाँव, हाथ में जामे-शराब हो

साक़ी हमारे जाम में क्यों बाल पड़ गया
ऐसा न हो कि ग़ैर को जूठी शराब दो

---
१. ख़ुदा की दया २. विरक्तो ३. मद्यपों के ४. धर्म गुरु या मुल्ला
५. लज्जित

गते मिले हैं वो मस्ते-शवाब[1] बरसों में
हुआ है दिल को सरूरे-शराब[2] बरसों में
बचेंगे हज़रते-ज़ाहिद[3] कहीं बगैर पिये
हमारे हाथ लगे हैं जनाब बरसों में

दुख्तरे-रज़[4] है बहुत तेज-मिजाज ऐ ज़ाहिद
तेरा क्या मुंह है—इसे भरते हैं भरने वाले

ज़ाहिद शराबे-नाब[5] की तासीर कुछ न पूछ
मक्सीर[6] है जो हल्क[7] के नीचे उतर गई

हम बादानोश पांव न रक्खें बहिश्त में
जब तक हमारे सामने जामो-सबू[8] न हो

मयकशो ! हज़रते-ज़ाहिद की तलाशी लेना
कि छुपाए हुए वो जाम लिये जाते हैं

य फस्ल[9] अगर होगी तो हर रोज पियेंगे
हम मय से करें तौबा कि बरसात से तौबा
वो आई घटा झूम के ललचाने लगा दिल
वाइज़ को बुलाओ कि चली हाथ से तौबा

१. जवानी से मस्त २. शराब का नशा ३. विरक्त महोदय ४ अंगूर की बेटी (शराब) ५. शराब ६. रामबाण ७. कण्ठ ८. प्याला और सुराही ९. ऋतु

जब 'दाग़' को ढूँढा किसी मयख़ाने में पाया
पर मैं कभी उस मर्दे-ख़ुदा को नहीं देखा

मयख़ाने के क़रीब है मस्जिद भले को 'दाग़'
हर एक पूछता है कि "हज़रत इधर कहाँ ?"

लुत्फ़े-मय[1] तुझसे क्या कहूँ ज़ाहिद
हाय, कमबख़्त ! तू ने पी ही नहीं

तक़सीर[2] मय-फ़रोश की[3] ऐ मुहतसिब[4] नहीं
ये चीज़ उड़ के जाती है मय-ख़्वार[5] की तरफ़

साक़िया तश्नगी[6] की ताब नहीं
ज़हर दे दे मगर शराब नहीं

मोहतसिब[7] तोड़ के शीशा[8] न बहा मुफ़्त शराब
अरे कमबख़्त छिड़क दे इसे मय-ख़्वारों पर

वाइज़ की बज़्मे-वा'ज़[9] में क्या भीड़-भाड़ थी
इतने में रिन्द[10] आए तो मैदान साफ़ था

---

१. शराब का आनन्द २. ग़लती ३. शराब बेचने वाले की ४. रसाध्यक्ष ५. शराब पीने वाला ६. प्यास ७. रसाध्यक्ष ८. बर्तन ९. उपदेश-सभा १०. मद्यप

की तर्क-मय तो[1] माइले-पिदार[2] हो गया[3]
मैं तौबा करके और गुनहगार हो गया

ईमान कुछ वुज़ू तो नहीं है कि टूट जाए
ऐ शेख[4] क्या हुआ जो मैं तौबा-शिकन[5] हुआ

हज़रते-ज़ाहिद[5] हर इक नश्शे को आदत शर्त है
मर न जायेंगे शराबे-चश्मा-ए कौसर से[6] आप ?

कभी झुकता हूं शीशे[7] पर कभी गिरता हू साग़र पर[8]
मेरी बेहोशियों से होश साकी के बिखरते हैं

देखना पीरे-मुगां[9] हज़रते-ज़ाहिद[10] तो नहीं
कोई बैठा नज़र आता है पसे-खुम[11] मुझको

भला हो पीरे-मुगां का, इधर निगाह मिले
फकीर है, कोई चुल्लू, खुदा की राह मिले

---

१. शराब छोड़ी तो २. आत्मगौरव करने लगा ३. मुल्ला ४. शराब पीने की तौबा तोड़ने वाला ५. विरक्त महोदय ६ जन्नत में बहने वाली शराब से ७ बोतल ८. प्याले पर ९. मदिरा-विक्रेता १० विरक्त महोदय ११. शराब के मटके के पीछे

पूछिये मयकशों[1] से लुत्फ़े-शराब
ये मज़ा पाकबाज़[2] क्या जाने

रिन्दाने-बे-रिया[1] की है सोहबत किसे नसीब
ज़ाहिद भी हममें बैठ के इन्सान हो गया

मयख्वार की निगाह ने हंगामे-मयकशी[3]
नश्तर चुभो दिया रगे-अब्रे-बहार में[4]

ज़ाहिद शराब पीने दे मस्जिद मे बैठ कर
या वो जगह बता दे जहा पर ख़ुदा न हो

रोज पीते हैं सुबूही[5] भी अदा करके नमाज
फ़र्क़ आ जाए तो पाबन्दिये-औकात[6] ही क्या

हमें तो हज़रते-वाइज़ की ज़िद ने पिलवाई
यहां इरादा-ए-नोशे-मुदाम[7] किसका था

वाइज़ ! तेरे लिहाज़ से हम सुनके पी गये
क्या नागवार[8] ज़िक्रे शराबे तहूर[9] था

---

१. शराबी, पियक्कड़ २. निष्कपट व्यक्ति ३. मदिरा पान के समय ४. वसन्त के बादल की गर्मी (नाड़ियां गर्म होने लगीं) ५. सुबह पाने के लिये रात को बचाकर रखी हुई शराब ६. समय की पाबन्दी ७. शराब पीने का इरादा ८. अप्रिय ९. जन्नत की शराब का चर्चा

यूं तो बरसों न पिलाऊ न पियू ऐ जाहिद
तौबा करते ही बदल जाती है नीयत मेरी

वो और हैं जो पीते हैं मौसम को देखकर
आती रही बहार में तौबा - शिकन[1] हवा

कल छुड़ा लगे पे[2] जाहिद ! आज तो साकी के हाथ
रहन इक चुल्ल पे हम ने हौज़े-कौसर[3] रख दिया

## 'दिल' शाहजहानपुरी

बहार जाम-ब-कफ़[4] झूमती हुई आई
शिकस्ते-तौबा न करते[5] तो और क्या करते

## 'नज्म' तबातबाई

अल्लाह रे साकी का वजिद हो के[6] पिलाना
कहता हूं मैं बस-बस तो वो कहता है नहीं और

---

१. तौबा को तोड़नेवाली २. पर ३. शराब से भरा हुआ जन्नत का तालाब ४. हाथ में शराब का प्याला लिए ५. तौबा को न तोड़ते ६. ज़िद करके

## 'नज़्म' नक़वी

अभी तो ऐ 'नज़्म' मयकदे में न जाने किस चीज़ की कमी है
हज़ार साग़र[1] छलक के छलके बुझा न एहसास तश्नगी[2] का

## 'नज़र' नौबतराय

कुछ बुरा ऐसा नहीं वाइज़ के मुंह से ज़िक्रे-मय[3]
ज़हर मिल जाता है लेकिन तल्ख़ी-ए-गुफ़्तार से[4]

## 'नज़ीर' अकबराबादी

दूर से आए थे साक़ी सुन के मयख़ाने का नाम
बस तरसते ही चले, अफ़सोस ! पैमाने को[5] हम

मय पी के जो गिरता है तो लेते हैं उसे थाम
नज़रों से गिरा जो उसे फिर किस ने संभाला

---

१. प्याले २. प्यास ३. शराब की चर्चा ४. बातचीत की कटुता से ५. शराब के प्याले को

मय भी है, मीना[1] भी है, साग़र भी है, साक़ी नहीं
दिल मे आता है लगा दें आग मयख़ाने में हम

ले, जाम लबालब भर देना, फिर साकी को कुछ ध्यान नही
ये साग़र पहुंचे दोस्त तलक[2], या हाथ लपक ले दुश्मन का

पहले ही साग़र मे थे, हम तो पड़े लोटते
इतने मे साक़ी ने दी, उस से कड़ी और भी

साकी ने भर के जाम दिए सब को बज़्म मे
सागर जो हमने मागा, तो शीशा[3] हिला दिया

## 'नातिक़'

गदा-ए-मयकदा[4] था, अब हू मैं शख़-हरम[5] 'नातिक़'
कही ऐसा न हो पहचान ले कोई यहा मुझको

मयकशो, मय की कमी-बेशी पे नाहक़[6] जोश है
ये तो साकी जानता है, किसको कितना होश है

---

१. सुराही २. तक ३. बोतल ४. शराबख़ाने का फ़क़ीर या भिखारी ५. मस्जिद का मुल्ला ६. व्यर्थ

## नासिख़

साक़ी बग़ैर शब[1] जो पिया आबे-आतशीं[2]
शोला सा वो बन के मेरे दहन[3] से निकल गया

तमन्ना है साक़ी, कभी बज़्मे-मय में[4]
वो सरशार[5] हो और हुशियार मैं हूं

## 'निज़ाम' शाह रामपुरी

देना वो उस का सागरे-मय[6] याद है 'निज़ाम'
मुंह फेर कर उधर को, इधर को बढ़ा के हाथ

## 'नशूर' वाहिदी

मे दिल की तश्नगी[7] है या नज़र की प्यास है साक़ी
हर-इक बोतल, जो ख़ाली है, भरी मालूम होती है

---

१. रात २. आग का पानी (शराब) ३. मुंह ४. शराब की महफ़िल में
५. नशे में ६. शराब का प्याला ७. प्यास

## 'नूर' बिजनौरी

### क़तआ

सू-ए-मेहराबे-फ़लक[1] जाम उछाला हम ने
छुप गया चान्द तो ख़ुर्शीद[2] निकाला हम ने
रुकते-रुकते भी सरे-अर्शे-बरीं[3] जा पहुंचे
गिरते-गिरते भी बहुत, ख़ुद को संभाला हमने

## 'नूह' नारवी

मयकदे में कभी तौबा को जो आते देखा
एक दीवार खड़ी हो गई पैमानों की

आप हैं, हम हैं, मय है, साकी है
ये भी एक अमरे-इत्तेफ़ाक़ी[4] है
बे पिए नाम तक नहीं लेता
मुझ को ये एहतिरामे-साक़ी[5] है

हमेशा बादाख्वारों पर ख़ुदा को मेहरबां देखा
जहां बैठे घटा उट्ठी, जहां पहुंचे बहार आई

---

१. आकाश की मेहराब की ओर २. सूरज ३. सातवें आसमान पर ४. संयोग की बात ५. साक़ी का सम्मान

क्यों रिन्दी-ओ-मस्ती में महरूम न मयख़ाना
बहता हुआ दरिया है, मचला हुआ पैमाना

## परवेज़ शाहिदी

हद्दे-अदब[1] में लग़ि़शे-पैमाना[2] क्यों रहे
दैरो-हरम[3] के बीच में मयख़ाना क्यों रहे
जब मोहतसिब[4] ही बन गया साक़ी का दस्त-रास्त[5]
पाबन्द हो के जुरअते-रिन्दाना[6] क्यों रहे
ये सिर्फ़ बिरहमन[7] से निभाते हैं दुश्मनी
रिन्दों के[8] साथ शेख़[9] का याराना क्यों रहे

## 'फ़ना' कानपुरी

कर लीजिए तौबा का यक़ीं हज़रते-वाइज़[10]
मयख़ाने को साक़ी की क़सम छोड़ दिया

---

१. आदर की सीमा २. प्याले का कपकपाना ३. मन्दिर-मस्जिद (काशी-काबा) ४. रस्मोबद्ध ५. दाया हाथ ६. मस्तों का साहस ७. ब्राह्मण ८. मस्तों के ९. धर्मगुरु, मुल्ला १०. धर्मोपदेशक महोदय

जब मेरे रास्ते में कोई मयकदा पड़ा
इक बार अपने ग़म की तरफ देखना पड़ा

## 'फ़ना' लखनवी

वो जाम हूं जो ख़ूने-तमन्ना से[1] भर चुका
ये मेरा ज़र्फ़[2] है कि छलकता नहीं हूं मैं

## 'फ़ानी' बदायूनी

दिल से पहुंची तो हैं आंखों से लहू की बूंदें
सिलसिला शीशे से[3] मिलता तो है पैमाने का[4]

चश्मे-साकी[5] कि थी कभी मख़मूर[6]
ख़ुद वही शराब हो के रही

---

१ अभिलाषा के ख़ून से २ सामर्थ्य ३. बोतल से ४. प्याले का ५. साकी की आंखें (नज़रें) ६. शराबी

## 'फ़ारिग़' बुख़ारी

### क़तए

देख कर आप की जवानी को
आरज़ूए - शराब[1] होती है
रोज़ तौबा को तोड़ता हूं मैं
रोज़ नीयत ख़राब होती है

क्या बात है इस ज़हद-ए-तक़द्दस[2] के तसद्दुक़[3]
मय भी जो मिली मुफ़्त की तो मुंह को न मोड़ा
मैं जानता हूं आप को ऐ हज़रते-वाइज़
दाढ़ी के सिवा आप ने किस चीज़ को छोड़ा

क़तरा के मयकदे से न जाओ जनाबे-शेख़[4]
रिन्दाने-नेकदिल से[5] रखो रस्मो-राह[6] भी—
माना कि नेकी करने पे बख़शिश का है मदार[7]
शायद कि काम आए करो कुछ गुनाह भी—

---

१. शराब की इच्छा २. संयम तथा पवित्रता ३. बलिहारी ४. धर्मगुरु उपदेशक (मुल्ला) ५. सदात्मा मद्यपों से ६. मेल-जोल ७. आधार

## शे'र

गर्दिशे-जाम में[1] रंगीन बना रखा है
वर्ना बेरंग सा है गर्दिशे-अय्याम[2] का रंग

अजीब सा है खराबात के[3] फ़क़ीहो का[4] फ़त्वा[5]
भड़कते शो'लों से तपते दिलों की प्यास बुझाओ

वो भी हैं मेरी बादा-गुसारी[6] पे मो'तरिज़[7]
इन्सान के लहू से हैं लबरेज़[8] जिन के जाम

खुदारा[9] कोई उनको राहे-मयकदा[10] पे डाल दे
जो ज़िन्दगी को खुश्क रहगुज़ार[11] कहते आए हैं

वो ताक़ में धरी है सुराही शराब की
तौहीन हो रही है शबे-माहताब[12] की

यहां मुदाम[13] मयस्सर ही किसको होती है
कभी कभी का तो पीना कोई गुनाह नही

---

१. प्याले के चक्र में २. कालचक्र ३. मधुशाला के ४. धर्मगुरुओं का ५. धर्मादेश ६. मदिरापान ७. आपत्तिकर्ता ८. परिपूर्ण ९. खुदा के लिए १०. मधुशाला के रास्ते पर ११. रास्ता १२. चांदनी रात १३. सदा

इतना भी कौन होगा हलाक-फरेबे-रग[1]
राब[2] उसने मय जो पी है तो मुझको नशा हुआ

## 'फ़िराक़' गोरखपुरी

आए थे हसते-खेलते मयखाने में 'फिराक'
जब पी चुके शराब तो सजीदा[3] हो गए

आख भर आती है अकसर पिछले शब को[4], ए 'फिराक'
वो खुमारी चश्मे-साकी[5], वो भरे सागर[6] कहा

अंगडाई सी लेती नजर आई है ये दुनिया
साकी, तेरे मयखाने मे जब सुब्ह हुई है

औरो को पिला जाम से बस मुझ को तो साकी
इक घूट बस उसका कि जो आखो से खिची है

छलकी पडती है मय-ए-नाब, रिसे जाते हैं हाथ
खैर साकी तेरे चटके हुए पैमाने की

---

१. रग अथवा दिखावे के फरेब द्वारा वधित २ रात ३. गभीर ४. रात के पिछले पहर को ५ साकी की आखो की खुमारी ६ प्याले

बज़्मे-मय है[1] कि सियाहख़ाना[2] तुझ बिन साक़ी
मौजे-बादा[3] है कि दर्द उठता है पैमानों में

## फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'

### क़तआ

ढलती है मौजे-मय[4] की तरह रात इन दिनों
खिलती है सुब्ह गुल की तरह रंगो-बू से पुर
वीरां है जाम, पास[5] करो कुछ बहार का
दिल आरज़ू से पुर करो, आंखें लहू से पुर

### शे'र

वीरां है मयकदा, ख़ुमो-साग़र[6] उदास हैं
तुम क्या गए कि रूठ गए दिन बहार के

न गुल खिले हैं, न उनसे मिले, न मय पी है
अजीब रंग में अब के बहार गुज़री है

मोहतसिब[7] की ख़ैर ऊंचा है उसी के फ़ैज़[8] से
रिन्द[9] का, साक़ी का, मय का, ख़ुम का, पैमाने का नाम

---

१. शराब की महफ़िल २. अंधेरा घर ३. शराब की लहर ४. शराब की लहर ५. सरकार ६. शराब के मटके और प्याले ७. धर्माध्यक्ष ८. कृपा ९. मद्यप

खर दोज़ख में मय मिले न मिले
शेख़[1] साहब से जां तो छूटेगी

रक़्से-मय[2] तेज़ करो, साज़ की लय तेज़ करो
सू-ए-मयखाना[3] सफ़ीराने-हरम[4] आते हैं

आए कुछ अब्र[5] कुछ शराब आए
उसके बाद आए जो अज़ाब[6] आए

## बशीर 'बदर'

कहो यारो, डुबो दें कुफ़्रो-ईमा[7]
अभी साग़र में इतनी बच रही है

ज़िन्दगी को कभी आलूदा-ए-साग़र[8] न करूं
मैं तेरे गम को अगर भूल सकूं आपसे आप

तो शायर, पैयम्बर[9] में पहचान क्या हो
अगर लग़्ज़िशे-मयकशां[10] आ न जाए

---

१. धर्मगुरु (मुल्ला) २. शराब का नृत्य ३ मधुशाला की ओर ४. का'बे की ओर आनेवाले यात्री ५. बादल ६ मुसीबत ७. कुफ्र और ईमान ८. शराब के प्याले से दूषित ९ पैगम्बर १०. शराबियों की सी लड़खड़ाहट

वो कैफ[1] हो, नशा हो, मुरव्वत कि मुहब्बत
साक़ी तेरी आंखों में कोई चीज छुपी है

ये कोई ख़ानक़ाह[2] है यारो
इस तरह मयकदा नहीं होता

मेरी तबाही का इलज़ाम अब शराब पे है
मैं और करता भी क्या तुम पे आ रही थी बात

## 'वासित' निस्वानी

साक़िया अक्स[3] पड़ा है जो तेरी आंखों का
और दो जाम नज़र आते हैं पैमाने में

## 'बेखुद' देहल्वी

'बेखुदे'-मयख्वार[4] की देखी शरारत तूने शैख़[5]
सुबह को मस्जिद से निकला शब को[6] मयख़ाने में था

१ आनन्द २. दरवेशख़ाना ३. प्रतिबिम्ब, छाया ४. शराबी 'बेखुद' ५. मुल्ला ६ रात को

## 'बेताब' अज़ीमाबादी

असर न पूछिये साकी की मस्त आंखों का
य देखिये कि कोई होशियार बाक़ी है

## 'बेदार' देहल्वी

आज साकी देख तो क्या है अजब रंगीं[1] हवा
सुर्ख मय, काली घटा और सब्ज है मीना[2] का रंग

## 'बेदिल' अज़ीमाबादी

अपने हाथों से दिया यार ने मीना[3] मुझको
रुखसत[4] ऐ तौबा कि लाज़िम[5] हुआ पीना मुझको

---

१. रंगीन २. शराब की सुराही ३. शराब की मटकी ४. विदा ५. आवश्यक

मोहतसिब[1] ! साक़ी की चश्मे-नीम-वा[2] को क्या करूं
मयकदे का दर[3] खुला, गर्दिश में जाम आ ही गया

निगाहे-साक़ी-ए-नामेहरबां[4] ये क्या जाने
कि टूट जाते हैं खुद दिल के साथ पैमाने
हयात[5], लग्ज़िशे-पैहम[6] का नाम है साक़ी
लबों मे[7] जाम लगा भी सकूं, खुदा जाने

मुझे ये फ़िक्र सब की प्यास अपनी प्यास है साक़ी
तुझे ये ज़िद कि खाली है मेरा पैमाना[8] बरसों से

बन गई है मस्ती में दिल की बात हंगामा
कतरा थी जो सागर में[9] लब पे आके तूफ़ां है

शराब हो ही गई है बक़द्रे-पैमाना[10]
ब-अज़्मे-तर्क[11] निचोड़ा जो आस्तीनों को

---

१.रसाध्यक्ष २. अधखुली आंख ३ मधुशाला का दरवाजा
. अकृपालु साक़ी की नजर ५. जीवन ६. निरन्तर लड़खड़ाहट
होंटों से ८. प्याला ९. प्याले मे १०. प्याले जितनी ११. शराब
ड़ने के सकल्प से

हरम से[1] मयकदे तक मंज़िले-यक-उम्र[2] थी साक़ी
सहारा गर न देती लग़्ज़िशे-पैहम[3] तो क्या करते

ये महफ़िल अहले-दिल[4] है यहां हम सब मयकश हम सब साक़ी
तफ़रीक़[5] करें इन्सानों मे इस बज़्म[6] का ये दस्तूर नहीं

मैं तो जब मानूं कि भर दे साग़रे-हर-ख़ास-ओ-आम[7]
यूं तो जो आया वही पीरे-मुग़ां[8] बनता गया

महो-ख़ुरशीद[9] भी साग़र-ब-कफ़[10] होकर उतर आए
ब-वक़्ते-बादानोशी[11] जब निचोड़ी आस्ती मैं ने

## 'मजाज़' लखनवी

### साक़ी

मेरी मस्ती मे भी अब होश ही का तौर[12] है साक़ी
तेरे साग़र मे ये सहबा[13] नहीं कुछ और है साक़ी

---

१ काबे या मस्जिद से २. आयु-भर का सफर ३ निरन्तर लड़-खड़ाहट ४. दिल वालो की ५. अन्तर ६ महफिल ७. छोटे बड़े सबका प्याला ८ मधुशाला का मालिक ९ चान्द-सूरज १०. हाथ में शराब का प्याला लिये ११. मदिरा-पान के समय १२. रग-ढग १३ अगूरी शराब

भड़कती जा रही है दम ब दम इक आग सी दिल में
ये कैसे जाम हैं साक़ी, ये कैसा दौर है साक़ी
वो दे दे जिससे नींद आ जाए अक़्ले-फ़ित्ना-परवर को[1]
कि दिल आज़ुर्दहे-रम्ज़े-लुत्फ़ो-जौर[2] है साक़ी
जवानी और यूँ घिर आए तूफ़ाने-हवादिस में[3]
ख़ुदा रक्खे अभी तो बेख़ुदी का दौर है साक़ी
छलकती है जो तेरे जाम से उस मय का क्या कहना
तेरे शादाब होटों की मगर कुछ और है साक़ी
मुझे पीने दे, पीने दे कि तेरे जामे-ला'ली में[4]
अभी कुछ और है, कुछ और है, कुछ और है साक़ी

मुझे साग़र[5] दोबारा मिल गया है
तलातुम[6] में किनारा मिल गया है
मेरी बादापरस्ती[7] पर न जाओ
जवानी को सहारा मिल गया है

भला सा नाम है उसका उसे कहते हैं क्या ज़ाहिद[8]
सुराही में जो ढलती है जो पैमाने में होती है

---

१. उपद्रव खड़े करने वाली बुद्धि को २. अनुकम्पा और अत्याचार के भेद से अनभिज्ञ ३. दुर्घटनाओं के तूफ़ान में ४. लाल रंग के प्याले (होंठों) में ५. प्याला ६. तूफ़ान ७. मदिरा की पूजा (मदिरा-पान) ८. विरक्त या पारसा

हाए वो वक़्त कि जब बेपिये मदहोशी थी
हाए ये वक़्त कि अब पीके भी मख्मूर नहीं

उस महफ़िले-कैफ़ो-मस्ती में[1], उस अंजुमने-इर्फ़ानी में[2]
सब जाम-ब-कफ़[3] बैठे ही रहे, हम पी भी गए छलका भी गए

अपनी इन मख़मर आखों की कसम
मेरी मयख्वारी[4] अभी तक राज़[5] है

मय-ए-गुलफ़ाम[6] भी है, साज़े-इश्रत[7] भी है, साक़ी भी
मगर मुश्किल है आशोबे-हक़ीक़त[8] से गुज़र जाना

आलमे-यास में[9] क्या चीज़ है इक सागरे-मय[10]
दश्ते-ज़ुल्मात में[11] जिस तरह खिज़र[12] की क़दील[13]

वाइज़ो-शैख़ ने सर जोड के बदनाम किया
वर्ना बदनाम न होती मय-ए-गुलफ़ाम[14] अभी

---

१ आनन्द और मस्ती की सभा मे २ ब्रह्मज्ञान की गोष्ठी में ३ हाथ में प्याला लिए ४ मदिरापान ५ रहस्य ६ गुलाबी रंग की शराब ७ आनन्द का साज ८ वास्तविकता की चुभन या विप्लव ९ निराशा की हालत में १० शराब का प्याला ११. अंधेरे के मरुस्थल में १२ एक दीर्घायु पैग़म्बर या पथ-प्रदर्शक १३ मशाल (काग़ज़ या अबरक से मढा हुआ फानूस) १४ गुलाबी रंग की शराब

## 'मन्ज़र' सलीम

### शराबखाना

शराबखाने में बैठा हूं सोचने के लिए
*न जाने कितने ख़यालो का राज़दा बनकर*
न जाने कितनी हृदों से गुज़रता जाता हूं

मगर हृदों से गुज़रकर फ़रेब खाता हूं
ये हृदें तो फिर भ्रा जायेंगी कही न कही
नज़र की राह में दीवारे-भ्रास्मा'[1] बनकर

फ़रेब खाना बडी बात तो नही लेकिन
ये चन्द लम्हों की'[2] दीवानगी ही क्या कम है
ये चन्द लम्हे जो भ्राते हैं मेहमा बनकर

शराबखाने में बैठा हूं सोचने के लिए
न जाने कितने ख़यालों का राज़दा बनकर
न जाने कितने ख़यालो से पूछता हूं मैं

ये दर्द क्या है यू जिस में मुब्तिला'[3] हूं मैं
ये कैसा ग़म मेरे दिल को जलाए जाता है
कभी शरारे-जहन्नुम'[4], कभी धुम्रा बन कर

---

१. आकाश रूपी दीवार २ क्षणों की ३ ग्रस्त ४. नरक की आग

न जाने शामो-सहर[1] के निगारखाने से[2]
ये तीर कौन मेरी सम्त[3] फेंक देता है
मेरे तड़पते हुए दिल का पासबां[4] बनकर

मगर ख़याल कभी बोलते हैं ऐसे में !
कहां से आएगी आवाज़ कौन बोलेगा
बग़ैर जाने हुए राज़ कौन खोलेगा ।

ये चन्द लम्हे जो आते हैं मेहमां बनकर
कहीं ये रूठ न जाएं कि मैं अकेला हूं
हर इक लम्हे की आमद[5] पे उठ न पाऊंगा

शराब ख़त्म हुई जा रही है रात आई
ज़माने भर की निगाहों का बार[6] उठाए हुए
यहां से उठ के कहां और कैसे जाऊंगा

## 'मयकश' अकबराबादी

ये बात हज़रते-वाइज़[7] से सीख ऐ मयकश[8]
कोई सुने न सुने आदमी कहे जाए

१. सुबह-शाम २. चित्रालय से ३. ओर ४. रक्षक ५. आगमन
६. बोझ ७. धर्मोपदेशक महोदय ८. मद्यप

## 'महरूम' तिलोकचन्द

पड़ी जो हम पे नज़र मयकदे मे[1] वाइज़[2] की
वही सुराही उठा के चला वुज़ू के लिए

कहीं न वादा-कशों के[3] ये दिल हों ऐ साकी
जो मयकदे में पड़े हैं शिकस्ता[4] पैमाने

## 'माईल' देहल्वी

लड़ते हैं जा के बाहर ये शेख और बिरहमन
पीते हैं मयकदे मे सागर[5] बदल बदल कर

## 'माहिर'-उल-क़ादरी

इक दूसरी बोतल आने तक, ये दुर्दे-तहे-साग़र[6] ही सही
ओ तश्ना-ए-मय[7]! बेताब न हो, साकी को नदामत होती है

---

१. मधुशाला में २. धर्मोपदेशक (मुल्ला) ३ मद्यपों के ४ टूटे हुए ५ प्याले ६ प्याले की तलछट ७ शराब के प्यासे

ये सुराही ये फरोग़े-मय-ए-गुल-रंग[1], ये जाम
चश्मे-साक़ी की[2] इनायत के सिवा कुछ भी नहीं

कितनी कैफ़-आवर[3] थी साग़र की खनक
आँख साक़ी की भपक कर रह गई

## मीर तक़ी 'मीर'

या हाथों हाथ लो मुझे मानिन्दे-जामे-मय[4]
या मेरे साथ-साथ चलो मैं नशे में हूँ

'मीर' उन नीमबाज़[5] आँखों में
सारी मस्ती शराब की सी है

ले के ख़ुद पीरे-मुग़ां[6] हाथ में मीना[7] आया
मयकशो[8] शर्म ! कि इस पर भी न पीना आया

---

१. गुलाबी रंग की शराब की चमक २. साक़ी की नज़रों की ३. आनन्ददायक ४. शराब के प्याले की तरह ५. अधखुली ६. मदिरा-विक्रेता ७ सुराही ८. मद्यपो

ख़राब रहते थे मस्जिद के आगे मयख़ाने
निगाहे-मस्त[1] ने साक़ी की इन्तिक़ाम[2] लिया

गिरया-ए-शब से[3] सुर्ख़ हैं आँखें
मुझ बलानोश को[4] शराब कहाँ

अब्र[5] उठा था काबे से और झूम पड़ा मयख़ाने पर
बादाकशों का[6] झुरमट होगा शीशे[7] और पैमाने पर

तुझ को मस्जिद है मुझ को मयख़ाना
वाइज़ा[8], अपनी-अपनी क़िस्मत है

मस्ती में लग़्ज़िश[9] हो गई मा'ज़ूर[10] रक्खा चाहिए
ऐ अहले-मस्जिद[11] ! इस तरफ़ आया हूं मैं भटका हुआ

अब तो जाते हैं मयकदे से 'मीर'
फिर मिलेंगे अगर ख़ुदा लाया

---

१. मस्त नज़र २. बदला ३. रात-भर रोने के कारण ४. बे
पीने वाले के लिए ५. बादल ६. मद्यपों का ७ बोतल ८
पदेशक (मुल्ला) ९ लड़खड़ाहट (ग़लती) १०. असमर्थ, म
११. मस्जिद वालो

## 'मुबारिक' अज़ीमाबादी

तू तो जाहिद[1] मुझे कहता है कि तौबा कर
क्या कहूंगा जो कहेगा कोई पीना हो

## 'मुल्ला' आनन्द नारायण

मय[1] सब को न हो तकसीम[1] अगर, अपना भी उलट दे
ये कुफ्र है कैशे-रिन्दी में[1] साकी से अकेले जाम

निज़ामे-मयकदा[1] साकी बदलने की जरूरत
हज़ारों हैं सफ़ें[1] जिन में न मय आई न जाम आप

मयकशों ने पी के तोडे जामे-मय
हाए वो सागर जो रक्खे रह गए

वो कौन हैं जिन्हें तौबा की मिल गई फुर्सत
हमें तो गुनाह भी करने को जिन्दगी कम है

---

१. विरक्त, पारसा २. शराब ३. बटे ४ प्याला ५. मय
नियम या धर्म में ६ मधुशाला की व्यवस्था ७. पंक्तियां

ये बज़्मे-दैरो-का'बा[1] है नहीं कुछ सहने-मयख़ाना[2]
ज़रा आवाज़ गूंजी और पहचानी नहीं जाती

ख़ाली है मेरा साग़र तो रहे साक़ी को इशारा कौन करे
ख़ुद्दारी-ए-साइल[3] भी तो है कुछ, हर बार तक़ाज़ा कौन करे

साक़िया जब मय हर इक मैकश की क़िस्मत में नहीं
सबको इस महफ़िल में पैमाने अता[4] क्यों हो गए

खंडर अक्सर जहां दैरो - हरम[5] के पाए जाते हैं
वहीं देखा गया है, मयकदा आबाद होता है

## मुस्तुफ़ा ज़ैदी

सहबा-ए-तुन्दो-तेज़[6] की हिद्दत[7] को क्या ख़बर
शीशे[8] से पूछिये जो मज़ा टूटने में था

---

१. पुजारियों और मुल्लाओं की महफ़िल २. मधुशाला का प्रांगण ३ मांगने वाले का आत्मसम्मान ४. प्रदान ५. मन्दिर-मस्जिद ६. तीखी और तेज़ ७. गर्मी ८. बोतल

## 'मुसव्विर' कांजोरी

अपना ईमा[1] रह्ने-मय[2] करता हूं मैं
मुफ़्त क्यों देता है साक़ी दाम लें

## 'मुसहफ़ी'

शीशा-ए-मय[3] की तरह् ऐ साक़ी
छेड़ मत हम भी भरे बैठे हैं

मैं अदा उसकी कहूं क्या मेरे मयनोश[4] ने रात
सर पे साक़ी के किस अंदाज़ से साग़र मारा

## 'मोमिन'

लबे-मयगू पे[5] जान देते हैं
हमें शौक़े-शराब ने मारा

---

१ ईमान २. शराब के लिए गिरवी ३. शराब की बोतल
४. मद्यप ५. शराब से तर होठों पर

ज़िक्र-शराबो-हूर कलामे-खुदा[1] मे देख
'मोमिन' मैं क्या कहूं मुझे क्या याद आ गया

## यूसुफ़ जमाल अनसारी

यकगूना[2] बेखुदी[3] भी कहां है शराब में*
सदियो के ग़म हैं तल्खी-ए-सहबा-ए-नाज़ मे[4]
पीता हूं मैं तो आप में आने के वास्ते
कम ज़र्फ़[5] नश्शा ढूंढ रहे हैं शराब मे

## रअ़ना जग्गी

साक़ी की शर्म, पासे-सुबू[6], जाम का लिहाज़
आदाबे-मयकदा[7] भी हैं कुछ मयकशी[8] के साथ

---

१. कुरान २. एक प्रकार की ३ आत्म-विस्मर्जन ४. नाज़ों-भरी शराब की कड़वाहट या तेज़ी मे ५. हल्के लोग ६. सुराही का आदर ७ मधुशाला के शिष्टाचार ८. मदिरा-पान

*मय से गरज़ निशात है किस रू-सियाह को
इक गूना बेखुदी मुझे दिन-रात चाहिये —ग़ालिब

## राजा महदी अली खां

### दो शराबी

पहला शराबी : ज़माना गर्दिश में भूमता है,
नशे निगाहों को आ रहे हैं
वो हाथ ज़िन्दा रहें खुदाया,
जो मुझको ह्विस्की पिला रहे हैं

दूसरा शराबी : जनाब क्या आप होश में हैं ?
अगर है ऐसा तो और लीजे
शराबखाने मे आए हैं तो
खुदी[1] को गर्क़े-शराब[2] कीजे

पहला शराबी : नशा बहुत हो गया है साहब,
न और दीजे शराब मुझको
कि इक बड़ा सांप लग रहा है,
ये लम्बा-लम्बा कबाब मुझको

दूसरा शराबी : कबाब तो बेहतरीन मिलते हैं
शाम को मेरे घर के आगे
और ऐसे खस्ता कि टूट जायें
अगर न लिपटे हों उन पे धागे

पहला : पता जनाब अपने घर का इस
खाकसार को भी बताइयेगा

---

२. शराब में ग़र्क़

दूसरा : ये कार्ड मेरा है भाई साहब,
: जरूर तशरीफ लाइयेगा
पहला : अठारह नम्बर ? निज़ाम मंज़िल ?
: ये मेरे घर का पता है साहब
दूसरा : मंगा दू टैक्सी, बहुत नशा
आप को अगर हो गया है साहब
पहला : नशे मे कोई भी अपने घर का
पता नही भूलता है मिस्टर
दूसरा : बहुत सी पी ले तो मा-बहन तक
को बिलयकीं[1] भूलता है मिस्टर
पहला : मेरे मुकर्रम[2] ! यकीन कर लो—
बहक गए हो नशे मे गुम हो
दूसरा : तो गोया 'फरहत' के नाम पर जो
मका है उसके मकीन[3] तुम हो
पहला : कसम खुदा की, उठारह नम्बर
. निज़ाम मज़िल, मेरा मका है
दूसरा : किराया देती है उसका 'फरहत'
तू कह रहा है तेरा मका है
पहला : नशे मे कहता हू साफ तुमसे,
बहुत है 'फरहत' को प्यार मुझसे

---

१ अवश्य ही २. आदरणीय ३. वासी

## 'रियाज़' खैराबादी

### रुबाइयां, क़'तए, ग़ज़लें और शे'र

आए हमारे आगे वो सागर शराब का
साकी ने जिसमे रंग भरा हो शबाब[1] का
रहमत[2] को ये अदा मेरी शायद पसन्द आए
डर-डर के काप-कांप के पीना शराब का

ऐ शैख वो का'बा हो या हो दरे-मयखाना[3]
तू ने मुझे जब देखा, सिजदे मे ही सर देखा
का'बे मे[4] नज़र आए जो सुबह अज़ा[5] देते
मयखाने में रातों को उनका भी गुज़र देखा

मैं समझा जब छलकता सामने जामे-शराब आया
मेरा मुह चूमने शायद मेरा मस्ते-शबाब[6] आया
निराले हैं यही दुनिया मे तौबा तोडने वाले
इधर साकी 'रियाज़' आए उधर जामे-शराब आया

---

१ जवानी २ खुदा ३ मधुशाला का दरवाज़ा या दहलीज़
४. मस्जिद में ५ अज़ान, बांग ६ जवानी से मस्त (प्रेयसी)

## 'शाकिर'

'शाकिर' की फ़ाक़ामस्ती से ख़ुमार की तरह
आता है मुझे दूरे मीना का शराब में

## 'राही' कुरैशी

तश्नगी मेरा मुक़द्दर' थी बरसना' साक़ी
मयकदे से कोई प्याला न उठा मेरे बाद

## 'रिन्द'

न रहा होश, बेख़ुदी' ही तो है
साक़िया शग़्ले-मयकशी' ही तो है

क़ुसूर क्या तेरा साक़ी, फ़लक' न देख सका
गिराया हाथ से, लब तक' जो मेरे जाम आया

---

१. भाग्य २. वर्षा ३. आत्मविसर्जन ४. मदिरापान का शुग़ल ५. आकाश, ख़ुदा ६. होंठों तक

## 'रियाज़' खैराबादी

### रुबाइयां, क़'तए, ग़ज़लें और शे'र

आए हमारे आगे वो सागर शराब का
साक़ी ने जिसमें रंग भरा हो शबाब[1] का
रहमत[2] को ये अदा मेरी शायद पसन्द आए
डर-डर के काप-काप के पीना शराब का

ऐ शैख वो का'बा हो या हो दरे-मयखाना[3]
तू ने मुझे जब देखा, सिजदे मे ही सर देखा
*का'बे में[4] नज़र आए जो सुबह अज़ां[5] देते*
मयखाने में रातो को उनका भी गुज़र देखा

मैं समझा जब छलकता सामने जामे-शराब आया
मेरा मुह चूमने शायद मेरा मस्ते-शबाब[6] आया
निराले हैं यही दुनिया मे तौबा तोड़ने वाले
इधर साक़ी 'रियाज़' आए उधर जामे-शराब आया

---

१ जवानी २ ख़ुदा ३ मधुशाला का दरवाज़ा या दहलीज़
४. मस्जिद मे ५ अज़ान, बांग ६ जवानी से मस्त (प्रेयसी)

हरम[1] की तरह नहीं मयकदे में बेदारी[2]
सिवा हमारे यहां एक होशियार नहीं
जनाबे-शैख ने[3] जब पी तो मुंह बना के कहा
मजा भी तल्ख[4] है कुछ बू भी नागवार[5] नहीं

मुंह बनाना है बुरा क्यों वक्ते-वा'ज़[6]
ग्राज वाइज तू ने पी ग्रच्छी नही
बुत-कदे मे[7] मयकदा ग्रच्छा मेरा
बेखुदी[8] ग्रच्छी, खुदी[9] ग्रच्छी नही

शरारे-तूर[10] है जो मौज[11] है पैमाने में
बिजलियां कौंदती हैं ग्राज तो मयखाने में
दे दे तू मेरी जवानी तेरे सदके साकी
है वही तेरे छलकते हुए पैमाने में

फ़र्दा की फ़िक्र[12] रखते नही मयकदे के लोग
जो कुछ हो हश्र[13] कल के लिए कुछ भी तै नहीं

---

१. मस्जिद २ जागरण ३. धर्मगुरु महोदय ने ४ तेज, कडव
५ प्रिय ६. धर्मोपदेश के समय ७ मन्दिर से ८ आत्मविसर्जन
९. अहं १०. तूर नामक पहाड पर की बिजली (जिसके द्वार
हज़रत मूसा को दैवी संकेत मिले थे) ११ लहर १२. आनेवाले कल
१३ परिणाम

खल्वत में[1] पी के जहर उगलते हैं बज्म में[2]
क्या है अगर ये हजरते-वाइज की कै नहीं

जवां कर दे इलाही सोहबते-पीरे-मुगां[3] मुझको
पुराने मयकदे वाले भी जानें नौजवां मुझको
शराब उड़ती रहे तो भी घटा छाई रहे यूं ही
न देखे आस्मां तुझको न देखे आस्मां मुझको
बडी मौकें मे थी हूर चन्द वो जन्नत से बाहर थी
हरम[4] से हट के रस्ते मे मिली मय की दुकां मुझको

मैं बुला लूंगा तुझे शैख[5] तेरे सर की कसम
मेरे घर आज किसी तरह उधार आए तो
तौबा लब पर[6] न सही, हाथ में बोतल ही सही
महफिले-वा'ज[7] मे कुछ बादा-गुसार[8] आए तो
लेंगे आखों से कदम दौड के सब अहले-हरम[9]
दरे-साकी से[10] कोई सिजदा-गुसार[11] आए तो

---

१ एकान्त में २ महफिल में ३. बूढे मदिरा-विक्रेता की सगत ४. मस्जिद ५ धर्मगुरु (मुल्ला) ६ होठो पर ७ धर्मोपदेश की सभा ८. मद्यप ९. मस्जिदवाले १०. मार्क की चौखट से ११ सिजदा करने वाला

कुछ भी चले न काम बुढ़ापे में ऐ 'रियाज़'
उठ कर ये मौजे - मय[1] जो हमारा असा[2] न हो

काबा-ओ-दैर में[3] होती है परस्तिश[4] किसकी
मयपरस्तो[5]! ये कोई नाम हैं मयख़ानों के
जामे-मय[6] तौबा-शिकन[7]! तौबा मेरी जाम-शिकन
सामने ढेर है टूटे हुए पैमानों के

रात दिन बज़्म में[8] दौरे - मय - ए - गुलफ़ाम[9] चले
और तुझ पे जो मेरा गर्दिशे-अय्याम[10] चले
काटे कटती नहीं मुझ मस्त से बरसात की रात
मयकदे वाला मिले आज तो कुछ काम चले
चश्मे-साग़र[11] ने भी हसरत से निगाहें डालीं
जब बचाए हुए हम जामा - ए - अहराम[12] चले
हम फ़क़ीरों का ख़ाली न रहे चुल्लू साक़ी
हम ग़रीबों का भी अल्लाह करे काम चले

---

१ शराब की लहर २. सहारे की लाठी या लकड़ी ३. काबे और काशी में ४. पूजा ५ शराब के पुजारियो ६. शराब का प्याला ७. तौबा को तोड़ने वाला ८ महफ़िल मे ९. गुलाबी शराब का दौर १०. कालचक्र ११ प्याले की आँखें १२. हज का लिबास

सलामत मयकदा या रब सलामत पीरे-मयखाना[1]
हरम[2] में हूं मेरी आंखों में है तस्वीरे-मयखाना
तुझे जाना भी है जन्नत में ऐ वाइज़ जवां होकर
जो आया है तो देखे जा ज़रा तासीरे-मयखाना[3]
रहे-दैरो-हरम[4] जो कोई भूला वो यहीं पहुंचा
न भूला रास्ता कोई कभी रहगीरे-मयखाना[5]
कहें हम क्या हमारा मयकदा वाबस्ता[6] है किससे
मिली है अर्श को[7] ज़ंजीर से ज़ंजीरे-मयखाना

क्या हुई मेरी जवानी जोश पर आई हुई
हाए वो नाज़ुक गुलाबी मेरी छलकाई हुई
नाम है मय, गुहो तल्ख़ी नहीं, तेज़ी नहीं
मुद्दतों ज़ाहिद[8] ने पी है मेरी खिंचवाई हुई

सौ बोतलें चढ़ाऊं तो नश्शा ज़रा न हो
पानी है ये शराब, जो काली घटा न हो
तौबा के तोड़ने में भी आता नहीं है लुत्फ़
जब तक शरीके-बादा[9] कोई पारसा न हो

---

१. मधुशाला का मालिक २. मस्जिद ३. मधुशाला का प्रभाव या कमाल ४. मन्दिर तथा मस्जिद की राह ५. मधुशाला को जाने वाला राहगीर ६. सम्बन्धित ७. सातवें आकाश की ८. विरक्त या पारसा ९. मदिरापान का सहयोगी

कुछ भी चले न काम बुढ़ापे में ऐ 'रियाज़'
उठ कर ये मौजे - मय[1] जो हमारा असा[2] न हो

काबा-ओ-दैर में[3] होती है परस्तिश[4] किसकी
मयपरस्तो[5] ! ये कोई नाम हैं मयखानों के
जामे-मय[6] तौबा-शिकन[7] ! तौबा मेरी जाम-शिकन
सामने ढेर हैं टूटे हुए पैमानों के

रात दिन बज़्म में[8] दौरे - मय - ए - गुलफ़ाम[9] चले
ज़ोर तुझ पे जो मेरा गर्दिशे-अय्याम[10] चले
काटे कटती नहीं मुझ मस्त से बरसात की रात
मयकदे वाला मिले आज तो कुछ काम चले
चश्मे-साग़र[11] ने भी हसरत से निगाहें डालीं
जब बचाए हुए हम जामा - ए - अहराम[12] चले
हम फ़क़ीरों का खाली न रहे चुल्लू साक़ी
हम ग़रीबों का भी अल्लाह करे काम चले

---

१. शराब की लहर २. सहारे की लाठी या लकड़ी ३. काबे और काशी में ४ पूजा ५ शराब के पुजारियो ६. शराब का प्याला ७. तौबा को तोड़ने वाला ८ महफ़िल में ९. गुलाबी शराब का दौर १०. कालचक्र ११. प्याले की आंखें १२. हज का लिबास

तौबा के बाद भी मुझे पहुंचे न तुमसे फ़ैज़[1]
साक़ी ये तेरी चश्मे-इनायत[2] से दूर है
ये शौक़ उनकी शान भी नहीं ख़ुल्द[3] को नसीब
ख़ाकों का मयकदा तेरी जन्नत से दूर है

तौबा से जो मेरी बोतल पक्की
जब टूटी है, जाम हो गई है
कुछ ज़हर न थी शराबे-अंगूर
क्या चीज़ हराम हो गई है

ज़माने - मयकदा[4] अर्शे-बरीं[5] मालूम होती है
ये ख़िश्ते-ख़ुम[6] फ़रिश्ते की जबीं[7] मालूम होती है
अरे साक़ी ज़रा मेरी शराबे - तल्ख़ तो लाना
मय-ए-कौसर[8] तो बिलकुल अंगबीं[9] मालूम होती है

रिंद ने मांगी है अपनी उम्र को
मयकदे से अब पुरानी जाएगी
पीने आयें तो फ़रिश्ता-ख़ू[10] 'रियाज़'
हूर के दामन में छानी जाएगी

---

१. लाभ २ कृपादृष्टि ३. जन्नत ४ मधुशाला की धरती ५. सातवां आकाश ६. शराब के मटके की ईंट अर्थात् जिस पकी मिट्टी से मटका बना है ७ माथा ८ जन्नत में शराब का एक स्रोत ९. शहद १०. देव-स्वभाव

जो हम मरए तो बोतल क्यों मलग पीरे-मुग़ां[1] रख दी
पुरानी दोस्ती भी ताक़ पर ऐ मेहरबाँ रख दी
ख़ुदा के हाथ है बिकना न बिकना मय का ऐ साक़ी
बराबर मस्जिदे - जामा के हम ने अब दुका रख दी

महफ़िल में भी देखा है हसीनों को पिलाते
ख़ल्वत[2] मे पिलाने का मज़ा और ही कुछ है
रिन्दो ने छिड़क दी जो तू पोंछ रहा है
ज़ाहिद[3], तेरी दाढ़ी मे लगा और ही कुछ है

लज़्ज़त[4] भी उसकी ख़ास है नश्शा भी देर पा
चोरी की हो कि मुफ़्त की हो या उधार की
ख़ुम[5] क्या है घर भी कोई जो भर दे शराब से
नीयत कभी भरे न मुझ बादा - ख़्वार[6] की

ये सर ब मुहर बोतलें हैं जो शराब की
रातें हैं इनमे बन्द हमारे शबाब[7] का
ऐसी दो - आतशा[8] मय - ए - गुलगूं[9] कहां नसीब
आदत बुरी पड़ी तेरी जूठी शराब की

१. मधुशाला का मालिक २ एकान्त ३ विरक्त, पारसा ४. स्वाद ५. मटका ६ मद्यप ७ जवानी ८ दो बार खिंची हुई ९ गुलाबी शराब

मीना - ओ - जाम[1] देख के खुश होगा मोहतसि
समझेगा वो खिली हुई कलियां गुलाब
महफ़िल में भी जो बोले वो इस एहतियात
मीना - ए - मय[3] ने तू न कभी दी शराब
काम आएगी रियाज़[4] को मश्क़े - तवाफ़े - खु
का'बे के गर्द[5] होंगे जो सूझो शराब

मर गए फिर भी तअल्लुक ये है मयखाने
मेरे हिस्से की छलक जाती है पैमाने

उतरी है आस्मां से जो कल उठा तो
ताक़े - हरम से[6] शेख वो बोतल उठा तो ला
मुझ को भी इन्तिज़ार था अब्र[7] आए तो पियूं
साक़ी अगर ये सच है कि बादल उठा, तो ला

कैसे ये बादाख्वार हैं सुन - सुन के पी गए
वाइज़ को कुछ मज़ा न किसी ने चखा दिया
इस वास्ते कि आव - भगत मयकदे में हो
पूछा जो घर किसी ने तो का'बा बता दिया

---

१. सुराही और प्याला २ रसाभ्यास ३ शराब की सुराही
४. शराब के मटके की परिक्रमा का अभ्यास ५. चक्र (परिक्रमा)
६ मस्जिद के ताक़ से ७ बादल

यों हुवा जन्नत को वो अब्रे-करम[1] छाया हुआ
मयकदा जन्नत है, जन्नत में जो पी तो क्या हुआ
मैं जो ख़ुम[2] पर झुक पड़ा तो हो गया वो मेरे सर
मुझ से बढ़कर आजकल नासेह[3] है कुछ बहका हुआ

क़र्ज़ लाया है कोई भेस बदल कर शायद
मयफ़रोशों का[4] है वाइज़[5] से तक़ाज़ा कैसा

कमबख़्त ने शराब का ज़िक्र इस क़दर किया
वाइज़ के मुह से आने लगी बू शराब की

क्या तुझ से तेरे मस्त ने मांगा मेरे अल्लाह
हर मौजे-शराब[6] उठ के बनी हाथ दुआ का

आबे-ज़मज़म[7] के सिवा कुछ नहीं का'बे मे रियाज़
मयकदा तुम जिसे समझे हो मदीना होगा

यहीं से बन्दगी दोनों को पहुचे मयकदे वालो
तअ़ल्लुक़ अब मेरा दैरो-हरम[8] से हो नहीं सकता

---

१. कृपारूपी बादल २. शराब का मटका ३. धर्मोपदेशक ४. मदिरा-विक्रेताओ का ५. धर्मोपदेशक ६. शराब की लहर ७ का'बे के एक पवित्र कुएं का पानी ८. काशी-काबा (मदिर-मस्जिद)

मिलेगी खिदमते-मयखाना शायद काबे वालों को
खुदा शैखे-हरम[1] शायद यहां पीरे-मुगां[2] होगा

अच्छी पी ली खराब पी ली
जैसी पाई शराब पी ली

आदत सी है, नशा है न अब कैफ़[3]
पानी न पिया, शराब पी ली है

मेरा यही खयाल है जो मैंने पी नहीं
कोई हसीं पिलाए तो ये शै बुरी नहीं

जन्नत से कम सही मगर अच्छा था मयकदा
जब तक वहां रहे ग़मे फ़र्दा[4] तो कुछ न था

मेरी शराब की क्या क़द्र जाने तू वाइज़
जिसे मैं पी के दुआ दूं वो जन्नती[5] हो जाए

धोके से पिला दी थी इसे भी दो घूट
पहले से बहुत नर्म है वाइज की ज़बां अब

१. मस्जिद का मुल्ला २. मधुशाला का प्रबंधक ३. आनन्द
४. कल की चिन्ता ५. जन्नत का अधिकारी

गए मयखानों से कितने हरम को खानकाहों को
हम इक रह गए हैं अब पुराने बादाख्वारी मे[1]

उठे कभी घबरा के तो मयखाने तक हो आए
पी आए तो फिर बैठ गए यादे-खुदा में

याद आई बहुत हम को, टूटी हुई तौबा भी
देखा जो कहीं हम ने टूटा हुआ पैमाना

काम मयखाने का हो जाएगा बन्द
चश्मे-साकी की हया[2] अच्छी नही

शराबे-नाब से साकी जो हम वुज़ू करते
हरम[3] के लोग तवाफ़े-खुमो-सबू[4] करते
शराब पीते हो सिजदे मे उन को गिरना था
ये शग्ल बैठ के मयनोश किबला-रू[5] करते

ये कह के निस्फ शब मे दरे-मयकदा[6] खुला
मांगी है एक बजुर्गे-तहज्जुद-गुजार[7] ने

१. मद्यपों में २ साक़ी की आखो की लज्जा ३. का'बा या मस्जिद ४ शराब के मटके-मटकियों की परिक्रमा ५. का'बे की ओर मुह करके ६. मधुशाला का दरवाज़ा ७. आधी रात के बाद की नमाज़ पढ़ने वाला नमाज़ी

हम जानते हैं लुत्फ़े - तक़ाज़ा - ए - मयफ़रोश[1]
वो नक़द में कहां जो मज़ा है उधार में

ख़ुमार - आलूद आंखों पर[2] हज़ारों मयकदे सदक़े
वो काफ़िर बे पिये भी रात-दिन मख़्मूर रहता है

ये क्या मज़ाक़ फ़रिश्तों को आज सूझा है
ख़ुदा के सामने ले आये हैं पिला के मुझे

दिन मे चर्चे ख़ुल्द[3] के शब[4] में मय-ए-कौसर[5] के ख़्वाब
हम हरम में[6] आ रहे मयख़ाना वीरां देख कर

तौबा करते हुए, रह रह के ये आता है ख़याल
मुंह मेरा देख के रह जाएगा साग़र मेरा

साल पलटे ले के ख़ुम[7] फेरी को निकले हैं 'रियाज़'
मयकदे कुछ वक़्फ़[8] हैं, इन शाह जी के वास्ते

---

१. मदिरा-विक्रेता के तक़ाज़े का आनन्द २ नशीली आंखों पर ३ जन्नत ४ रात ५ जन्नत में शराब का एक चश्मा ६ काबे या मस्जिद में ७ शराब का मटका ८ मुक़र्रर या समर्पित

क़द्र मुझ रिन्द की तुझ को नहीं ऐ पीरे-मुगां[1]
तौबा कर लूं तो कभी मयकदे ग्राबाद न हो

उठाग्रो मेज़ से मय-ग्रो-साग़र 'रियाज़' जल्द
ग्राते हैं इक बुज़ुर्ग पुराने ख़याल के

वो ग्रा रहा है ग्रसा[2] टेकता हुग्रा वाइज़[3]
ग्रहा दे इतनी कि साक़ी कहीं न थाह मिले

कमर सीधी करने ज़रा मयकदे तक
ग्रसा[4] टेकते क्या 'रियाज़' ग्रा रहे हैं

किरन सूरज की निकली जामे-मय से[5]
ये कैसी धूप निकली चादनी मे

भर-भर के जाम बज़्म मे छलकाये जाते हैं
हम उनमें हैं जो दूर से तरसाये जाते हैं

ये कम नहीं है बुढ़ापे मे हम ने तौबा की
तमाम उम्र में हम ने ये एक काम किया

---

१ मधुशाला का मालिक या प्रबधक २ लाठी ३ धर्मोपदेशक ४. लाठी ५ शराब के प्याले से

शैख जो मयकदा वो जन्नत है
तुम भी जाकर जवान हो जाते

वांस पर मयकदे में तुमको चढाया ऐ शैख
फिर भी ऊंचे तेरी मस्जिद के किनारे निकले

मयकदे में ईद मुफ्त मुफलिस
की हो जाए 'रियाज'
दे के इक चुल्लू कोई
ले तीस रोजों का हिसाब

पाको - साफ[1] ऐसी कि जिस ने पी फरिश्ता हो गया
जाहिदो[2] ! ये हूर के दामन में है छानी हुई

वो भी बख्शे गए हम बादा - कशों के[3] हमराह
आज जन्नत में हमें नासहे - मगफूर[4] मिले

उतर गई सरे - बाजार[5] शैख की पगड़ी
गिरह में दाम न होंगे उधार पी होगी

१. तथा स्वच्छ २ विरक्तो ३ मद्यपों के ४. बख्शे हुए
५. बीच बाजार में

शेख जी डूब गए थे हौज में मयखाने के
डूब कर चश्मा-ए-कौसर[1] के किनारे निकले

नीची दाढ़ी ने आबरू रख ली
क़र्ज पी आए इक दोका से आज

## रुसवा

बाद तौबा के भी है दिल मे ये हसरत बाक़ी
दे के कसमे कोई इक जाम पिला दे हम को

## 'वजाहत' झंझानवी

### क़तग्रा

वाइज़[2] की गत बनाई थी रिन्दो ने[3] बेतरह
ये जानते थे उसका बस अब पाप कट गया
लेकिन वो दम चुराए पड़ा था जमीन पर
रिन्दों ने पुश्त[4] फेरी तो उठकर झपट गया

---

१ जन्नत में बहने वाला शराब का चश्मा २ धर्मोपदेशक (मुल्ला) ३ मद्यपों ने ४. पीठ

## 'वहशत' कलकत्तवी

क्या-क्या मुझे तग़ाफ़ुले-साक़ी' का था गिला
देखा तो मैं ही लायक़े-लुत्फ़ो-करम' न था

## 'वामिक़' जौनपुरी

पी लिया करते हैं जीने की तमन्ना में कभी
डगमगाना भी ज़रूरी है सँभलने के लिए

## 'शकील' बदायूनी

तर्के-मय' ही समझ इसे नासेह'
इतनी पी है कि पी नहीं जाती

ज़ाहिद' की मयकशी पे तअज्जुब न कीजिये
लाती है रंग फ़ितरते-आदम' कभी-कभी

१. साक़ी की बेरुखी २. कृपा-पात्र ३. मदिरा-त्याग ४. धर्मो-
५. विरक्त, पारसा ६. आदि मानव की प्रकृति

सा रहा है मय कोई शीशे में[1] भर कर सामने
किस क़दर पुरकैफ मन्ज़र[2] है नजर के सामने

शिकस्ते-बेखुदी[3] के मुस्तकिल[4] सामान तो होंगे
न क्यों जी भर के पी लूं मयकदे वीरान तो होंगे

मयकदे का मयकदा खामोश था मेरे बगैर
मैं हुआ वारिद[5] तो पैमाने सदा[6] देने लगे

उठा जो मीना-ब-दस्त[7] साकी, रही न अब ताबे-ज़ब्त[8] बा
तमाम मयकश पुकार उट्ठे "यहा से पहले", "यहां से पहले

साकी नजर से पिनहां[9], शीशे[10] तही-तही[11] से
बाज आए हम तो ऐसी बेकैफ[12] जिन्दगी से

आ गई हैं रहमतें[13] फिर जोश में
होश में ऐ पीने वालो होश मे

---

१ बोतल में २ आनन्दपूर्ण दृश्य ३ आत्मविसर्जन की
ग्रय (पीने पर पाबन्दी के कारण) ४ स्थायी ५. दाखि
६ आवाजें ७ हाथ में सुराही लिए ८ सहनशक्ति ६. छुपा
१०. बोतलें ११ खाली-खाली १२. आनन्दरहित, फीकी १३
की कृपाएं

सारा आलम[1] पा-ए-बादानोश पर[2]
एक सागर दस्ते-बादानोश में[3]

हाय मेरा मातमे - तश्नालबी[4]
शीशा मिलकर रो रहा है जाम से

जाने किन नज़रों से देखा आज साक़ी ने मुझे
मैं तो ये समझा कि मुझ तक दौरे-जाम आ ही गया

खोल दे बाबे-मयकदा[5] साक़ी
इक फ़रिश्ता भी इन्तिज़ार में है

फ़ितरत के हसीं नज़्ज़ारों में पुरकैफ़[6] ख़ज़ाने और भी हैं
मयख़ाना अगर वीरां है तो क्या, रिंदों के[7] ठिकाने और भी हैं
जीना है तुझे पीने के लिए, ऐ दोस्त किसी उन्वान से[8] पी
पीने का बहाना एक सही, पीने के बहाने और भी हैं

न पैमाने खनकते हैं न दौरे-जाम चलता है
नई दुनिया के रिन्दों में ख़ुदा का नाम चलता है

---

१ संसार २ मद्यप के क़दमों पर ३. मद्यप के हाथ में
४. पिपासा का सोग ५. मधुशाला का दरवाज़ा ६. आनन्दपूर्ण
७. मद्यपों के ८ शीर्षक या प्रसग से

'शकील'-मस्त को मस्ती में जो कहना है कहने दो
ये मयखाना है ऐ वाइज यहां सब काम चलता है

मैं नजर से पी रहा था तो ये दिल ने बद्दुआ दी
तेरा हाथ जिन्दगी भर कभी जाम तक न पहुंचे

रह न सकेंगे अब निहां[1] राज़े-दरूने-मयकदा[2]
रिन्दों को होश आ गया पीरे-मुगां की[3] खैर हो

## 'शफ़ीक़' जौनपुरी

ये उजाला है हमारे ही कदम से साकी
हम गए और तेरा मयकदा बेनूर[4] हुआ

## 'शहाब' जाफरी

### ग़ज़ल

मेरी मस्ती को मेरी आगहा[5] पर नाज़ है साक़ी
जहां मैं हूं वहां आवाज ही आवाज है साक़ी

१ निहित २ मधुशाला के भीतरी भेद ३ मधुशाला के प्रबंधक की ४ प्रकाशहीन ५ जानकारी, ज्ञान

मयकदा है ये समझ-बूझ के पीना ऐ रिन्द[1]
कोई गिरते हुए पकड़ेगा न बाज़ू तेरा

साकी की चश्मे-मस्त पे मुश्किल नही निगाह[2]
मुश्किल सभलना है दिले - बेकरार का

ज़मी पे जाम को रख दे, ज़रा ठहर साकी
मैं इस पे हो लू तसद्दुक[3] तो फिर उठा कि पियू

लड़खड़ा के जो गिरा पाव पे साकी के गिरा
अपनी मस्ती के तसद्दुक ये मुझे होश रहा

हश्र[4] मे रिन्द[5] ये खामोश सोहबते-मय[6] से छूटकर
पीरे-मुगां को[7] देख कर देने लगे दुहाइया

देखा किये वो मस्त निगाहो से बार-बार
जब तक शराब आए, कई दौर हो गए

*ग़ज़ब निगाह ने साकी की बन्दोबस्त किया*
शराब बाद को दी, पहले सबको मस्त किया

---

१. मद्यप २. नज़र रखना ३ बलिहारी ४ प्रलय-क्षेत्र में ५. मद्यप ६ शराब की सगत ७ मधुशाला के मालिक या प्रबधक को

उम्र बाकी पड़ी है सोने को
आज की रात जाग लें साकी

दावरे-हश्र[1] देखता क्या है
मैं वही रिन्दे-लाउबाली[2] हूं
इससे पहले कि तू सवाल करे
मैं खुद इक जाम का[3] सवाली हूं

साकिया! साक़िया! सभाल इसे
फेंक दे न कोई जाल इसे
गर्दिशे-रोजगार[4] आई है
इक दो सागरो से[5] टाल इसे

डूबती सास को उभारा है
नब्ज़ गिरती हुई सभाली है
मय को सागर मे डाल कर साकी
जान मे तू ने जान डाली है

ए गमे-दिल! बहार बन के मुझे
मयकदे को फ़ज़ा[6] पे छाने दे

१. खुदा २. धृष्ट मद्यप ३. प्याले का ४ कालचक्र ५ प्यालों से
६. वातावरण

मुद्दतों बाद मुस्कराया हूं
आज जी भर के मुस्कराने दे

हर तमन्ना गुनाह बन जाए
हर नफ़स[1] सर्द आह बन जाए
मयकदे का वजूद[2] हो न अगर
जिन्दगी ख़ानक़ाह बन जाए

शेख़ साहब ! मुक़ाबला कैसा
हमसरी[3] क्या शराब-नोशों से[4]
एक इस्मतफ़रोश बेहतर है
आप जैसे ख़ुदा-फ़रोशों से[5]

कैसे यक-दम[6] फ़ज़ा[7] बदलती है
ये करिश्मा अभी दिखाता हूं
तुम ज़रा गेसुओं को[8] बिखराओ
मैं भी लहरा के जाम उठाता हूं

---

१. श्वास २. अस्तित्व ३. समता ४. शराब पीने वालों से
: को बेचने वालों से ६. एकाएक ७. वातावरण ८. केशों को

आलमे-वेखुदी[1] के बाद अकसर
होश में आए हम तो ये जाना
जह्रे-कातिल है होश की तल्खा
इक हिमाकत है होश में आना

मयकदे के दिये तो रौशन थे
अपने दिल का चिराग जल न सका
ऐसा सगीन[2] गम था सीने मे
गर्मी-ए-मय[3] से भी पिघल न सका

बादाखाने में घूम कर देखें
लवे-साग़र[4] को चूम कर देखें
ऐ ग़मे-दिल अगर इजाजत हो
दो घड़ी हम भी झूम कर देखें

जिन्दगी पर गर्द सी जमी देखी
नब्ज़े-हस्ती[5] थमी-थमी देखी
होश में जिसने भी मुझे देखा
उस ने मुझ मे मेरी कमी देखी

---

१ मदिरा-पान द्वारा आत्मविसर्जन २ पथरीला (अत्यधिक)
३. शराब की गर्मी ४ प्याले के होंठ ५. जीवन-नाड़ी

आख़िरी बार अपने होंट ज़रा
आबे-ख़ुश-रंग[1] में भिगो आऊं
अभी चलता हूं ऐ अजल[2] लेकिन
इक ज़रा मयकदे से हो आऊं

अपने एहसास की हलाकत[3] पर
ख़ून रोता हूं और जीता हूं
जब बकसरत[4] शराब पीता था
अब ब-हसरत[5] शराब पीता हूं

बादा ए-आतशीं[6] से ऐ साक़ी
ग़मज़दों के दिमाग़ रौशन कर
आंसुओं की शिकस्ता[7] क़ब्रों पर
क़हक़हों के चिराग़ रौशन कर

ख़ुद से यूं बेनियाज़[8] होते हैं
जैसे दानाए-राज़[9] होते हैं
'शाद' साहब ख़राबे-मय[10] होकर
आदमी दिलनवाज़ होते हैं

---

१ सुन्दर रंग के पानी (शराब) मे २ मृत्यु ३. हत्या ४. बहुत अधिक ५ हसरत के साथ ६ आग रूपी शराब ७. टूटी-फूटी ८. निश्चित ९ भेद जानने वाले ज्ञानी १० मदिरा-पान के कारण तबाह

## शे'र

ये इन्तिज़ार ग़लत है कि शाम हो जाए
जो हो सके तो अभी दौरे-जाम हो जाए
ख़ुदानख़्वास्ता पीने लगे जो वाइज भी
हमारे वास्ते पीना हराम हो जाए
मुझ ऐसे रिन्द[1] को भी तू ने हश्र में[2] या रब
बुला लिया है तो कुछ इन्तिज़ाम हो जाए

तल्ख़ी-ए-मय[3] ही इलाजे-तल्ख़ी-ए-आलाम[4] है
गर्दिशे - साग़र जवाबे - गर्दिशे - अय्याम[5] है

हमारी ज़िन्दगी का हुस्न मयख़ाने में है साक़ी
यहाँ आकर ये दीवानी हसी मालूम होती है

हम अपने दर्द की तौहीन कर गए होते
अगर शराब न होती तो मर गए होते

ग़मे-दुनिया को बाहर मैं अकेला छोड़ आया था
वो मेरा मुन्तिज़र होगा न कर ताख़ीर[6] ऐ साक़ी

१. मद्यप २ प्रलय में ३ शराब की कड़वाहट ४. विपत्तियों की कड़वाहट का इलाज ५ कालचक्र का उत्तर ६ देर

जिन्दगी को मयकदे में बारहा जाना पड़ा
ऐ ग़मे-दुनिया तुझे दिलकश बनाने के लिए

## आग़ा 'शायर' क़ज़लबाश

पी पिला कर उसे रहमत[1] की क़सम देते हैं
कैसे बन्दे हैं कि अल्लाह को दम देते हैं

## 'शायर' लखनवी

सिखा रहे हैं वो आदाबे - मयकशी[2] हम को
जो मयकदे में छलकते रहे सबू[3] की तरह

तू फ़क़त[4] जाम का मफ़हूम[5] समझ ऐ साक़ी
तशनगी[6] क्या है, ये मयख़्वार[7] समझ लेते हैं

जो लड़खड़ाए हैं पी के तलछट, उन्हें मुबारिक हो लड़खड़ाना
मुझे है उन मयकशों पे हैरत जो बे पिये ही बहक गए हैं

1. दया 2. शराब पीने के नियम (शिष्टाचार)
4. केवल 5. अर्थ 6. प्यास 7. मद्यप

## 'शेफ्ता'

क्या मयकदे में है कि मद्रिसे[1] में वो नही
अलबत्ता एक वां[2] दिले-बेमुद्दआ[3] न था

जो बात मयकदे मे है इक-इक जबान पर
अफसोस मद्रिसे मे है बिल्कुल निहां[4] हनोज[5]

साकी की बेमदद न बनी रात को
मुतरिब[6] अगर्चे काम में अपने यगाना[7] था

आई जो आज काम में सहबा-ए-तुन्दो-तल्ख[8]
साकी ने खूब राज कहे बारे-आम मे[9]

## 'सबा' अफ़ग़ानी

उम्र भर गर्दिशे-सागर[10] से रहा काम मुझे
इस लिए छू न सकी गर्दिशे-एय्याम[11] मुझे

---

१ पाठशाला या धर्मस्थल २ वहां ३ निरुद्देश्य मन ४. निहित ५. अभी ६ गायक ७ अद्वितीय ८ तेज नशीली शराब ९ सब के सामने १० शराब के प्याले का चक्र अर्थात् मदिरा-पान ११ कालचक्र

ज़िन्दगी को मयकदे में बारहा आना पड़ा
ऐ ग़मे-दुनिया तुझे दिलकश बनाने के लिए

## आग़ा 'शायर' क़ज़लबाश

पी लिया कर उसे रहमत[1] की क़सम देते हैं
कैसे बन्दे हैं कि अल्लाह को दम देते हैं

## 'शायर' लखनवी

सिखा रहे हैं वो आदाबे - मयकशी[2] हम को
जो मयकदे में छलकते रहे सबू[3] की तरह

तू फ़क़त[4] जाम का मफ़हूम[5] समझ ऐ साक़ी
तश्नगी[6] क्या है, ये मयख़्वार[7] समझ लेते हैं

वो लड़खड़ाए हैं पी के तलछट, उन्हें मुबारिक हो लड़खड़ाना
मुझे है उन मयकशों पे हैरत जो बे पिये ही बहक गए हैं

---

१. ख़ुदा की दया २. शराब पीने के नियम (शिष्टाचार)
३. शराब की मटकी ४. केवल ५. अर्थ ६. प्यास ७. मद्यप

## 'शेफ़्ता'

क्या मयकदे में है कि मद्रिसे[1] में वो नहीं
अलवत्ता एक वां[2] दिले-बेमुद्दआ[3] न था

जो बात मयकदे में है इक-इक जबान पर
अफ़सोस मद्रिसे मे है बिल्कुल निहा[4] हनोज़[5]

साक़ी की बेमदद न बनी रात को
मुतरिब[6] अगर्चे काम में अपने यगाना[7] था

आई जो आज काम में सहबा-ए-तुन्दो-तल्ख़[8]
साक़ी ने ख़ूब राज कहे बारे-आम में[9]

## 'सबा' अफ़ग़ानी

उम्र भर गर्दिशे-साग़र[10] से रहा काम मुझे
इस लिए छू न सकी गर्दिशे-एय्याम[11] मुझे

---

१. पाठशाला या धर्मस्थल २ वहां ३ निरुद्देश्य मन ४ निहित ५. अभी ६ गायक ७ अद्वितीय ८ तेज नशीली शराब ९ सब के सामने १० शराब के प्याले का चक्र अर्थात् मदिरा-पान ११. कालचक्र

## 'साइल' देहलवी

मोहतसिब[1] तस्बीह[2] के दानों पे ये गिनता रहा
किन ने पी, किनने न पी, किन-किन के आगे जाम था

तकल्लोफ़े-इन्तिज़ार अबस[3] जाम के लिए
बोतल को तोड़ डालिये पैमाना हो गया
दो-चार मिल के बैठ गए बज़्मे-ऐश में
दो-चार ख़ुम[4] लुढा दिये मयख़ाना हो गया

हमेशा पी के मय जामो-सुराही तोड़ देता हूं
न मेरा दिल तरसता है, न फ़र्क़ आता है ईमां में

दरे-मयख़ाना[5] चौपट है, तहज्जुद[6] की हुई चोरी
गिरे टूटे हुए शीशे, फ़क़त[7] जूठे प्याले हैं
गुमां[8] किस पर करें मयकश, इधर वाइज़ उधर सूफ़ी
ख़ुदा रक्खे मुहल्ले में सभी अल्लाह वाले हैं

---

१. रसाध्यक्ष २ जपमाला ३ व्यर्थ ४. शराब के मटके ५. मधु-का दरवाजा ६. आधी रात के बाद सुबह होने से पहले-पहले [illegible] जाती है ७ केवल ८. भ्रम

## 'साक़िब' लखनवी

ये गवारा न किया दिल ने कि मागू तो मिले
वर्ना साकी को पिलाने में कोई इनकार न था

बढ़ाए हौसले दरिया-दिली ने साकी की
जरा से जाम मे सौ बार आफ़्ताब[1] आया

पिला के मुझ को निकाला है अपनी महफ़िल से
वो नेकिया नही अच्छी जो हों बदी के लिए

सोने वालों को क्या खबर ऐ रिन्द[2]
क्या हुआ एक शब मे[3], क्या न हुआ

## 'साग़र' निज़ामी

ये मयकदा है तेरा मद्रिसा[4] नही वाइज़[5]
यहा शराब से इन्सा बनाए जाते हैं

१ सूरज २. मद्यप ३ रात मे ४. पाठशाला ५. धर्मोपदेशक

## ग़ज़ल

फिर मुझे आरज़ू-ए-जाम[1] हुई
फ़िक्रे-दुनिया-ओ-दीं[2] हराम हुई
मेरी तौबा का अब ख़ुदा-हाफ़िज़
वो छुपा आफ़ताब[3], शाम हुई
हम ने हर दिन को पांव से रौंदा
अपनी हर रात नज़्रे-जाम[4] हुई
मुहर-बर-लब[5] थी बन्द बोतल में
जब लुंढाई तो हम-कलाम[6] हुई
कुछ हसीं जलवे, चन्द जामे-शराब
यही जागीर अपने नाम हुई
मयपरस्ती[7] भी छोड दे 'साहिर'
ये परस्तिश[8] भी रस्मे-आम[9] हुई

मयकदे में भी आ कभी वाइज़[10]
एक दुनिया यहां भी बसती है
पीने वालो ये सोचना कैसा
कौन महंगी है कौन सस्ती है

शराब के प्याले की इच्छा २. संसार तथा धर्म की चिन्ता
प्याले की भेंट ५. होंठों पर मुहर लगी थी ६. सम्बोधित
. ८ पूजन ९. सामान्य रस्म १०. धर्मोपदेशक

क्या ख़तर[1] गर्दिशे-फ़लक[2] से हमें
गर्दिशे-जाम[3] से मोहब्बत है
बादा, सहबा, शराब, मय, दारू
ऐसे हर नाम से मोहब्बत है

खाए जाती है नदामत मुझे इस गफलत की
होश में आ के चला आया हूं मयख़ाने से
तर्के-मय[4] का कभी आता ही नहीं दिल में ख़याल
हमने पैमाने-वफ़ा[5] बांधा है पैमाने से

## 'सीमाब' अकबराबादी

हाय 'सीमाब' उसकी मजबूरी
जिसने की हो शबाब में[6] तौबा

## सैफ़ुद्दीन 'सैफ़'

### रुबाई

अब दीदा-ए-पुरनम की[7] हक़ीक़त[8] क्या है
तू है तो मेरे गम की हक़ीक़त क्या है

१. ख़तरा २ कालचक्र ३ प्याले का दौर ४. मदिरा-त्याग ५. व[फ़ा]
[निभाने] का वचन ६ जवानी में ७ सजल नेत्रों की ८ वास्तविक[ता]

आंख तुम्हारी मस्त भी है मस्ती का पैमाना भी
एक छलकते साग़र में मय भी है मयख़ाना भी

## 'साग़र' सद्दीक़ी

लोग कहते हैं रात बीत चुकी
मुझ को समझाओ, मैं शराबी हूं

## 'साहिर' हकीम अहमद शुजाअ़

जो आया शेख़ मयकदे में इक महशर[1] हुआ बर्पा
कहां दीवानों की महफ़िल में ये बदबख़्त आ निकला

'साहिर' अब भी कहीं मिलता है तो मयख़ाने में
किस क़दर पास[2] है इस रिन्द[3] को ख़ुद्दारी[4] का

[1] शोर मचा २ ख़याल, सम्मान ३. मद्यप ४. आत्म-

## 'साहिर' होशियारपुरी

### क़त'ए

आपके वास्ते गुनाह सही
हम पियें तो सवाब[1] बनती है
सौ ग़मों को निचोड़ने के बाद
एक क़तरा शराब बनती है

वे पिये ही शराब से नफ़रत
ये जहालत नहीं तो फिर क्या है
ज़ुहद[2] के बदले ख़ुल्द[3] में हूरें
ये तिजारत नहीं तो फिर क्या है

ने'मतों के ख़ज़ाने खोल दिये
रहमते-हक़[4] ने जोश में आकर
ख़ुदग़रज़ सीमो-ज़र पे[5] टूट पड़े
अहले-दिल ने[6] उठा लिये साग़र

---

१. पुण्य २. पारसाई ३. जन्नत ४. ईशकृपा ५. चाँदी-सोने पर
६. दिल वालों ने

## ग़ज़ल

फिर मुझे आरज़ू-ए-जाम[1] हुई
फ़िक्रे-दुनिया-ओ-दीं[2] हराम हुई
मेरी तौबा का अब खुदा-हाफ़िज़
वो छुपा आफ़ताब[3], शाम हुई
हम ने हर दिन को पाव से रौंदा
अपनी हर रात नज़्रे-जाम[4] हुई
मुहर-बर-लब[5] थी बन्द बोतल में
जब लुढाई तो हम-कलाम[6] हुई
कुछ हसी जलवे, चन्द जामे-शराब
यही जागीर अपने नाम हुई
मयपरस्ती[7] भी छोड़ दे 'साहिर'
ये परस्तिश[8] भी रस्मे-आम[9] हुई

मयकदे मे भी आ कभी वाइज़[10]
एक दुनिया यहा भी बसती है
पीने वालो ये सोचना कैसा
कौन महगी है कौन सस्ती है

---

१. शराब के प्याले की इच्छा २. ससार तथा धर्म की चिन्ता ३. सूरज ४. प्याले की भेंट ५. होंटो पर मुहर लगी थी ६. सम्बोधित ७. मदिरा-पूजन ८ पूजन ९. सामान्य रस्म १०. धर्मोपदेशक

इक जाम अगर हुस्ने-अदा से[1] मिल जाए
असरारे-दो आलम की[2] हक़ीक़त क्या है

## 'सौदा'

इस मयकदे मे 'सौदा' हम तो कभी न बहके
सब मस्तो-बेख़बर थे हुशियार था सो मैं था

मयकशों ! रूह हमारी भी कभी शाद[3] करो
टूटे गर बज़्म में[4] शीशा[5] तो हमें याद करो

गर हो शराबो-ख़ल्वतो-महबूबे-ख़ूबरू[6]
ज़ाहिद[7] तुझे कसम है जो तू हो तो क्या करे

मयकदे और काबे में है क्या तफ़ावत[8] शैख़ जी[9]
शीशा[10] है पत्थर की हर इक सिल में, समझो तो कहूं

---

१. सुन्दर अदा से २. दोनों लोकों के दर्शन को ३. प्रसन्न ४. मह-
। में ५. बोतल ६. शराब, एकान्त तथा सुन्दर प्रेयसी ७. विरक्त,
मा ८. फ़र्क़ ९. धर्मगुरु या मुल्ला जी १०. बोतल

कब से ऐ 'सौदा' शराब इस बज़्म में पीते हैं यार
तू ने ऐ कमज़र्फ़[1] की पहले ही पैमाने में[2] धूम

क्या करूंगा ले के वाइज़ हाथ से हूरों के जाम
हूं मैं साग़र-कश[3] किसी की नर्गिसे-मख़मूर का[4]

कैफ़ियते-चश्म[5] उसकी मुझे याद है 'सौदा'
सागर को[6] मेरे हाथ से लेना कि चला मैं

साकी गई बहार, रही दिल में ये हवस
तू मिन्नतों से जाम दे और मैं कहूं कि बस

न देखा जो कुछ जाम में जम[7] ने अपने
वो इक कतरा-ए-मय में[8] हम देखते हैं

साक़ी, है यक-तबस्सुमे-गुल[9] मौसमे-बहार[10]
ज़ालिम भरे है जाम तो जल्दी से भर कहीं

---

१ अपात्र २ प्याले में ३ प्याला पीने वाला ४ नर्गिस ऐसी मदमाती आंखों का ५ आंखों की मत्तता ६ शराब के प्याले को ७ जनसमूह ८. शराब की बूंद में ९. फूल की मुस्कान (क्षण-भर के लिए) १०. वसन्त ऋतु

## 'हफ़ीज़' जालंधरी

ऐ मुब्तिला-ए-जीस्त[1] ठहर खुदकशी न कर
तेरा इलाज ज़हर नहीं है शराब है

फ़िर्दौस[2] की तहूर[3] भी आखिर शराब है
मुझको न ले चलो मेरी नीयत खराब है

वो सामने धरी है सुराही भरी हुई
दोनों जहान आज हैं मेरे अख्तियार में

दौर[4] ये है कि दौरे-मय भी नहीं
और—ऐसी तो और शै भी नही

मयकदे बद हैं तो मस्जिद तक
हम से होगी ये राह तै भी नही

हम खूने जिगर पी के चले जाएंगे साक़ी
ले शीशा-ए-दिल[5] तोड़ दे पैमाना बना दे

१. जीवन-ग्रस्त २ जन्नत ३ जन्नत में मिलने वाली एक शराब
४ काल, समय ५ दिल रूपी बोतल

सुना है मैंने भी जिक्रे-शराबो-हूरो-कसर[1]
खुदा का शुक्र है नीयत मेरी खराब नही

## 'हफ़ीज़' जौनपुरी

बादे-तौबा[2] भी वही याद है मयखाने की
गर्दिश[3] आंखो मे फिरा करती है पैमाने की[4]

## 'हफीज़' बनारसी

रश्क[5] से देखें न क्यो याराने-मयखाना[6] मुझे
सब को जामे-मय[7] मिला आंखो का पैमाना[8] मुझे

## 'हसरत' मोहानी

मश्वुरे दे जो तर्के-मय के[9] हमें
ऐसे ग़मख्वार[10] से खुदा की पनाह

१ (जन्नत की) शराब, हूरों और महलो की चर्चा २ तौबा के बाद ३. चक्र ४. प्याले की ५ ईर्ष्या ६. मधुशाला के मित्र ७ शराब का प्याला ८. प्याला ९ मदिरापान के त्याग के १० हितैषी

या रब हमारे बाद भी बज़्मे-शराब में[1]
साक़ी के दम से दौरे-मए-गुलगूं[2] रहे

तूने रंग दी थी जहां छीन के हम से बोतल
रूहे-मस्ती[3] उसी जानिब[4] निगरां[5] है साक़ी

ये हुआ बेअदबियों पर नश्शा-ए-मय का[6] असर
कह दिया सब उनसे हाले-शौक़[7] गुस्ताख़ाना[8] आज

वो रिन्दे-बादाख़्वार[9] हूं कि हुआ जो मयकदे में गुज़र
ये ख़ैर मक़दम[10] इधर से मैं तो उधर से पीरे-मुग़ां[11] उठा

## 'हाली' मोलाना

### क़ित'आ

शेख़[12] रिन्दों में[13] भी हैं कुछ पाकबाज़[14]
सब को मुल्ज़िम तू ने ठहराया अबस[15]

---

१. शराब की महफ़िल में २. गुलाबी शराब का दौर ३. मस्ती आत्मा ४. ओर ५. देख रही ६. शराब के नशे का ७. 'मुझे आपसे हब्बत है'—यह बात ८. धृष्टता-पूर्वक ९. मदिरा का पुजारी मद्यप . स्वागत ११ मधुशाला का प्रबंधक १२. धर्मगुरु या मुल्ला . मद्यपों में १४. पुनीतात्मा १५ व्यर्थ

था निकलते थे कभी मस्जिद में हम
तू ने जाहिद हमको शर्माया अबस

बज्मे-मय[1] अच्छी है, जो दुनिया है ऐ मयख्वार[2]! हेच[3]
यां समझ लेते तो हैं दुनिया को दम भर यार, हेच

रिया[4] को सिद्क[5] से है जामे-मय[6] बदल लेता
तुम्हें भी है कोई याद ऐसी कीमिया[7] साकी

## अज्ञात शायर 9770

खानकाहों से है पोशीदा[8] तअल्लुक जिनका
रास्ते ऐसे गए हैं कई मयखाने को

मुद्दतें गुजरी हैं शग्ले-मयकशी[9] छूटे हुए
वो पड़े हैं ताक़ पर जामो-सुबू[10] टूटे हुए

पी के हम तुम जो चले झूमते मयखाने से
झुक के क्या बात कही शीशे ने[11] पैमाने से

१. शराब की महफ़िल २. मद्यप ३. तुच्छ ४. पाखंड ५. सच्चाई ६. शराब का प्याला ७ रसायन ८. छुपा ९. मदिरा-पान का मनोविनोद १०. प्याले और मदिरा-पात्र ११. बोतल ने

इस पुस्तक मे प्रेस की भूल से कुछ अशुद्धियां रह गई हैं, उन्हे इस प्रकार पढ़ें

| पृष्ठ स० | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|
| २४ | अख्तर शीरानी | 'अख्तर' शीरानी |
| ३८ | 'अख्तर' अली अख्तर | 'अख्तर' अली अख्तर |
| ३९ | 'अख्तर' अनसारी अकबराबादी | 'अख्तर' अनसारी अकबराबादी |
| ३९ | 'अख्तर' अनसारी देहल्वी | 'अख्तर' अनसारी देहल्वी |
| ४० | 'अख्तर' लखनवी | 'अख्तर' लखनवी |
| ४१ | 'अख्तर' हरीचन्द | 'अख्तर' हरीचन्द |
| ४५ | अली जवाद जैदी | अली जवाद ज़ैदी |
| ५१ | 'आरजू' लखनवी | 'आरज़ू' लखनवी |
| ५९ | कमाल अहमद सिद्दीका | कमाल अहमद सिद्दीक़ी |
| ६३ | 'कैफी' दत्तात्रय | 'कैफ़ी' दत्तात्रय |
| ६८ | 'जज्बी' मुईन अहसन | 'जज़्बी' मुईन अहसन |
| ६९ | 'जफ़र' बहादुरशाह | 'ज़फर' बहादुरशाह |
| ६९ | सिराजुद्दीन 'अफ़र' | सिराजुद्दीन 'ज़फ़र' |
| ७१ | जहूर नजर | ज़हूर नज़र |
| ७६ | जुबेर रिजवी | 'ज़ुबेर' रिज़वी |
| ७६ | 'जेब' उस्मानिया | 'ज़ेब' उस्मानिया |
| ९७ | 'नज्म' तबातबाई | 'नज़्म' तबातबाई |
| ९८ | 'नजम' नक़वी | 'नजम' नक़वी |
| १०८ | फंज अहमद 'फंज' | फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़' |
| १११ | 'बेखुद' देहल्वी | 'बेख़ुद' देहल्वी |
| १२५ | मुस्तुफा जैदी | मुस्तुफ़ा ज़ैदी |
| १३४ | 'राही' कुरैशी | 'राही' क़ुरैशी |
| १३५ | 'रियाज' खैराबादी | रियाज़ खैराबादी |
| १६६ | 'शेफ्ता' | 'शेफ़्ता' |
| १७७ | सैफुद्दीन 'सैफ' | सैफ़ुद्दीन 'सैफ़' |